नवसर्जन संस्कृति

RNI No. GJHIN/25/A2786
NAVSARJAN SANSKRUTI

नवसर्जन संस्कृति

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 099
दि. 10.01.2026,
शनिवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

अजब सियासत की गजब कहानी, अंबरनाथ में भाजपा को सत्ता से दूर रखने के लिए शिवसेना–राकांपा ने मिलाया हाथ

(जीएनएस)। मुंबई। महाराष्ट्र की राजनीति में अक्सर ऐसे दृश्य देखने को मिलते हैं, जहां दोस्त दुश्मन बन जाते हैं और दुश्मन दोस्त, लेकिन अंबरनाथ नगर परिषद में जो हुआ है, उसने सियासत के तमाम स्थापित नियमों को एक बार फिर उलट-पलट कर रख दिया है। राज्य और केंद्र में साथ-साथ सत्ता चला रही शिवसेना (एकनाथ शिंदे गुट) और राकांपा (अजित पवार गुट) ने स्थानीय राजनीति में अपनी ही सहयोगी भारतीय जनता पार्टी को सत्ता से बाहर रखने के लिए एक-दूसरे का हाथ थाम लिया है। शुक्रवार को शिवसेना और राकांपा ने एक निर्दलीय पार्षद के साथ मिलकर नया गुट बनाते हुए जिला प्रशासन को औपचारिक पत्र सौंप दिया, जिससे अंबरनाथ नगर परिषद की सत्ता की तस्वीर पूरी तरह बदल गई है।

इस घटनाक्रम ने यह साफ कर दिया है कि महाराष्ट्र में गठबंधन की राजनीति केवल विचारधारा पर नहीं, बल्कि मौके और समीकरणों पर ज्यादा निर्भर करती है। शिवसेना के वरिष्ठ नेताओं ने खुले तौर पर स्वीकार किया है कि यह कदम भाजपा की उन कोशिशों को नाकाम करने के लिए उठाया गया है, जिसके तहत वह कांग्रेस के बागी पार्षदों के सहारे नगर परिषद पर कब्जा जमाने की तैयारी कर रही थी। दिलचस्प यह है कि राज्य स्तर पर जिन दलों के बीच तालमेल और सहयोग की बातें की जाती हैं, वही दल स्थानीय स्तर पर एक-दूसरे के खिलाफ रणनीतिक चालें चलते नजर आ रहे हैं।

इस पूरी सियासी खींचतान की जड़ कांग्रेस के भीतर मचा विद्रोह बना। अंबरनाथ नगर परिषद चुनाव के बाद कांग्रेस से निलंबित किए गए 12 पार्षदों ने भाजपा का दामन थाम लिया। भाजपा ने इन बागी पार्षदों के सहारे 'अंबरनाथ विकास आघाडी' के नाम से नया मोर्चा खड़ा किया, जिसका मकसद शिवसेना को सत्ता से दूर रखना था। यह गठबंधन इसलिए भी चौंकाने वाला था, क्योंकि भाजपा और कांग्रेस को आमतौर पर कट्टर प्रतिद्वंद्वी माना जाता है। इस असामान्य राजनीतिक गठजोड़ ने कांग्रेस नेतृत्व को असहज कर दिया और पार्टी को सार्वजनिक रूप से किरकिरी झेलनी पड़ी। नतीजतन कांग्रेस आलाकमान ने सख्त कदम उठाते हुए अपने सभी 12 नवनिर्वाचित पार्षदों और एक प्रखंड अध्यक्ष को पार्टी से निलंबित कर दिया।

अंबरनाथ नगर परिषद के 60 सदस्यीय सदन के चुनावी आंकड़े इस पूरी कहानी को और भी रोचक बना देते हैं। चुनाव परिणामों में शिवसेना 27 सीटों के साथ सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी थी। भाजपा को 14 सीटें मिली थीं, जबकि कांग्रेस के खाते में 12, राकांपा को 4 और निर्दलीय उम्मीदवारों को 2 सीटें मिली थीं। बहुमत का आंकड़ा 31 का था और शुरुआती दौर में भाजपा ने कांग्रेस और राकांपा के साथ मिलकर 32 सदस्यों का समर्थन जुटाने का दावा किया था। यही वह स्थिति थी, जिसने शिवसेना को अलर्ट कर दिया और सत्ता से बाहर होने का खतरा साफ नजर आने लगा।

राजनीतिक अस्थिरता के इसी माहौल में शिवसेना और अजित पवार गुट की राकांपा ने अपने पुराने मतभेद भुलाते हुए नया मोर्चा बना लिया। दोनों दलों के साथ एक निर्दलीय पार्षद भी जुड़ गया, जिससे इस नए गठबंधन की संख्या सीधे 32 तक पहुंच गई। इस जादुई आंकड़े के साथ अब शिवसेना-राकांपा-निर्दलीय गठबंधन नगर परिषद में सरकार बनाने का मजबूत दावा पेश कर रहा है। भले ही मौजूदा नगर परिषद अध्यक्ष भाजपा से हैं, लेकिन पार्षदों के इस नए ध्रुवीकरण ने भाजपा की स्थिति को कमजोर कर दिया है और सत्ता संतुलन पूरी तरह बदल दिया है।

अंबरनाथ की यह राजनीति महाराष्ट्र की उस व्यापक तस्वीर को भी दिखाती है, जहां एक ही समय में सहयोग और प्रतिस्पर्धा साथ-साथ चलती है। राज्य में सत्ता साझा करने वाले दल जब स्थानीय निकायों में आमने-सामने आ जाते हैं, तो गठबंधन की मजबूती और उसकी सीमाएं दोनों उजागर होती हैं। शिवसेना और राकांपा का यह कदम भाजपा के लिए न केवल राजनीतिक झटका है, बल्कि यह संदेश भी है कि स्थानीय स्तर पर सत्ता के खेल में कोई स्थायी मित्र या शत्रु नहीं होता।

कुल मिलाकर अंबरनाथ नगर परिषद की यह कहानी 'अजब सियासत की गजब कहानी' को पूरी तरह चरितार्थ करती है। यहां विचारधाराओं से ज्यादा संख्या बल, रणनीति और समय की अहमियत दिख रही है। आने वाले दिनों में यह देखना दिलचस्प होगा कि यह नया गठबंधन कितनी मजबूती से टिकता है और क्या भाजपा इस सियासी झटके से उबरकर कोई नई चाल चल पाती है या नहीं। फिलहाल अंबरनाथ की राजनीति पूरे महाराष्ट्र में चर्चा का विषय बन चुकी है।

आर्कटिक में बदलता मौसम बना वैश्विक चेतावनी इंसानों और जीव-जंतुओं पर मंडराया संकट

(जीएनएस)। लंदन। आर्कटिक क्षेत्र अब जलवायु परिवर्तन के सबसे खतरनाक और निर्णायक मोड़ पर पहुंचता नजर आ रहा है। वैज्ञानिकों के एक नए अंतरराष्ट्रीय अध्ययन में दावा किया गया है कि आर्कटिक में मौसम का स्वरूप तेजी से और असामान्य तरीके से बदल रहा है, जिससे वहां के पौधों, जानवरों और इंसानों के अस्तित्व पर गंभीर खतरा उत्पन्न हो गया है। यही नहीं, यह बदलाव पूरी दुनिया के लिए भी चिंता का विषय है, क्योंकि आर्कटिक की कार्बन सोखने की क्षमता को भारी नुकसान पहुंच रहा है, जिससे वैश्विक जलवायु परिवर्तन की रफ्तार और तेज हो सकती है। शोध के अनुसार आर्कटिक क्षेत्र पृथ्वी के अन्य हिस्सों की तुलना में तीन से चार गुना तेजी से गर्म हो रहा है। इस असंतुलित गर्मी के कारण वहां 'चरम मौसम' की घटनाएं लगातार बढ़ रही हैं, जो पहले बहुत दुर्लभ मानी जाती थीं। वैज्ञानिकों ने बताया कि अब आर्कटिक में लंबे समय तक चलने वाली लू, गर्मियों में अचानक पाला पड़ना और सर्दियों में असामान्य रूप से गर्म तापमान जैसी घटनाएं आम होती जा रही हैं। ये

बदलाव वहां की नाजुक पारिस्थितिकी व्यवस्था के लिए बेहद घातक साबित हो रहे हैं। यह अध्ययन फिनिश मेट्रोलॉजिकल इंस्टीट्यूट और यूनिवर्सिटी ऑफ शेफील्ड के वैज्ञानिकों की अगुवाई में किया गया, जिसमें 70 वर्षों से अधिक के मौसम संबंधी आंकड़ों का गहन विश्लेषण किया गया। यह पहली बार है जब 'बायोक्लाइमैटिक' यानी जीवों के लिए आवश्यक जलवायु परिस्थितियों में हो रहे बदलावों को इतने व्यापक स्तर पर समझने की कोशिश की गई है। शोधकर्ताओं का कहना है कि अब आर्कटिक का एक-तिहाई हिस्सा ऐसे मौसमीय हालात का सामना कर रहा है, जो उसके लिए पूरी तरह नए और अभूतपूर्व हैं।

अध्ययन में एक और गंभीर तथ्य सामने आया है कि पिछले 30 वर्षों में आर्कटिक के 10 प्रतिशत से अधिक क्षेत्र में बर्फ के ऊपर बारिश की घटनाएं बढ़ गई हैं। यह स्थिति वहां रहने वाले जानवरों के लिए बेहद खतरनाक है। जब बर्फ पर बारिश होती है और फिर तापमान गिरता है, तो वह जमकर बर्फ की सख्त परत बना देती है। इस परत के कारण बारहसिंगा जैसे जानवर बर्फ के नीचे दबी काई तक नहीं पहुंच पाते, जो सर्दियों में उनका मुख्य भोजन होती है। भोजन न मिलने से बड़ी संख्या में इन जानवरों की मौत हो रही है, जिससे पूरे पारिस्थितिक संतुलन पर असर पड़ रहा है।

शोधकर्ताओं ने कुछ ऐसे क्षेत्रों की पहचान भी की है, जिन्हें 'हॉटस्पॉट' कहा गया है, जहां मौसम और चरम घटनाओं में बदलाव सबसे अधिक देखने को मिला है। इनमें पश्चिमी स्कैंडिनेविया, कनाडाई आर्कटिक द्वीपसमूह और मध्य साइबेरिया शामिल हैं। इन इलाकों में मौसमी पैटर्न में आए बदलाव इतने तीव्र हैं कि वहां की वनस्पति और जीव-जंतु उनके अनुरूप खुद को ढाल नहीं पा रहे हैं।

यूनिवर्सिटी ऑफ शेफील्ड के प्रोफेसर गैरेथ फीनिक्स के अनुसार, इन चरम घटनाओं के कारण बड़े पैमाने पर पौधों की मृत्यु हो सकती है। यह केवल आर्कटिक तक सीमित समस्या नहीं है, बल्कि पूरी दुनिया के लिए खतरे की घंटी है। आर्कटिक क्षेत्र पृथ्वी के सबसे बड़े प्राकृतिक कार्बन सिंक में से एक है, जो वातावरण से कार्बन डाइऑक्साइड को सोखकर जलवायु परिवर्तन की गति को धीमा करता है। यदि पौधों और वनस्पति को नुकसान पहुंचता है, तो यह क्षमता कमजोर पड़ जाएगी और वैश्विक तापमान बढ़ने की प्रक्रिया और तेज हो सकती है।

वैज्ञानिकों ने इस शोध के लिए आधुनिक 'एटमॉस्फेरिक री-एनालिसिस डाटा' का इस्तेमाल किया, जिसमें मौसम मॉडल और वास्तविक अवलोकनों को एक साथ जोड़ा जाता है।

दावोस में भारत की मजबूत मौजूदगी, डोभाल, वैष्णव और मुकेश अंबानी होंगे वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम का हिस्सा

(जीएनएस)। नई दिल्ली। वैश्विक आर्थिक, राजनीतिक और रणनीतिक विमर्श के सबसे बड़े मंच वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम की वार्षिक बैठक में इस बार भारत की भागीदारी विशेष रूप से प्रभावशाली रहने वाली है। स्विट्जरलैंड के दावोस में 18 से 24 जनवरी तक आयोजित होने वाली इस बैठक में राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल, केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव और देश के सबसे बड़े उद्योगपति मुकेश अंबानी सहित भारत के कई शीर्ष नेता और कारोबारी हिस्सा लेंगे। पांच दिन चलने वाले इस वैश्विक सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधिमंडल न केवल संख्या में बड़ा होगा, बल्कि वैश्विक नीतियों और निवेश के एजेंडे पर उसकी भूमिका भी निर्णायक मानी जा रही है। इस वर्ष वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम की बैठक का विषय 'संवाद की भावना' रखा गया है, जो बदलते वैश्विक हालात में सहयोग, आपसी समझ और सामूहिक समाधान की जरूरत को रेखांकित करता है। अधिकारियों के अनुसार, भारतीय प्रतिनिधि कई अहम सत्रों और पैनल चर्चाओं में सक्रिय भागीदारी करेंगे। इनमें सबसे प्रमुख विषयों में यह सवाल शामिल है कि क्या भारत आने वाले वर्षों में दुनिया की तीसरी

सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की क्षमता रखता है। इस चर्चा में भारत की आर्थिक वृद्धि, विनिर्माण क्षमता, डिजिटल क्रांति, बुनियादी ढांचे और निवेश के अवसरों पर विस्तार से विचार किया जाएगा।

भारतीय प्रतिनिधिमंडल की खास बात यह है कि इसमें केंद्र सरकार, राज्य सरकारों और निजी क्षेत्र—तीनों का संतुलित प्रतिनिधित्व देखने को मिलेगा। केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव के साथ शिवराज सिंह चौहान, प्रल्हाद जोशी और के राम मोहन नायडू के शामिल होने की संभावना है। वहीं राज्यों की ओर से महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस, आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन चंद्रबाबू नायडू, असम के हिमंत बिस्व सरमा, मध्य प्रदेश के मोहन यादव, तेलंगाना के ए रेवंत रेड्डी और झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन दावोस पहुंच सकते हैं। इसके अलावा कर्नाटक के उपमुख्यमंत्री डी के शिवकुमार और गुजरात के उपमुख्यमंत्री हर्ष सांघवी की मौजूदगी भी संभावित बताई जा रही है। यह भागीदारी इस बात का संकेत है कि राज्य सरकारें भी वैश्विक निवेशकों के सामने अपने-अपने राज्यों को निवेश के आकर्षक गंतव्य के रूप में पेश करने के लिए तैयार हैं। उद्योग जगत की बात करें तो मुकेश अंबानी के अलावा टाटा समूह के चेयरमैन एन चंद्रशेखरन, बजाज समूह के संजीव बजाज, भारती एंटरप्राइजेज के सुनील भारती मित्तल, इंफोसिस के सह-संस्थापक नंदन नीलेकणि और पेटीएम के संस्थापक विजय शेखर शर्मा जैसे दिग्गज कारोबारी भी दावोस में भारत का प्रतिनिधित्व करेंगे। इन उद्योगपतियों की मौजूदगी से भारत की तकनीकी क्षमता, डिजिटल इकोनॉमी, स्टार्टअप इकोसिस्टम और निवेश के अवसरों को वैश्विक मंच पर मजबूती से रखा जाएगा। भारतीय प्रतिनिधि केवल मुख्य सत्रों तक सीमित नहीं रहेंगे, बल्कि कई द्विपक्षीय बैठकों और भारत-केंद्रित कार्यक्रमों में भी भाग लेंगे। इन बैठकों का उद्देश्य विदेशी निवेश को आकर्षित करना, रणनीतिक साझेदारियों को मजबूत करना और भारत की विकास यात्रा को वैश्विक नेतृत्व के सामने प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करना है। दावोस में भारत की यह सक्रियता ऐसे समय में सामने आ रही है, जब वैश्विक अर्थव्यवस्था मंदी, भू-राजनीतिक तनाव और आपूर्ति श्रृंखला की चुनौतियों से जूझ रही है, और भारत को एक स्थिर तथा उभरती अर्थव्यवस्था के रूप में देखा जा रहा है। इस वैश्विक बैठक में दुनिया भर के करीब 130 देशों के लगभग 3,000 नेता हिस्सा ले सकते हैं। इनमें अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप, संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंतोनियो गुतारेस, विश्व बैंक के अध्यक्ष अजय बंगा और अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष की प्रमुख क्रिस्टालिना जॉर्जीवा जैसे प्रभावशाली नाम शामिल होने की संभावना है। ऐसे मंच पर भारत की मजबूत और संगठित मौजूदगी न केवल देश की वैश्विक छवि को सशक्त करेगी, बल्कि यह भी दर्शाएगी कि भारत अब वैश्विक फैसलों में केवल सहभागी नहीं, बल्कि दिशा तय करने वाला अहम खिलाड़ी बन चुका है।

सेना प्रमुख की यूएई और श्रीलंका यात्रा से भारत के रक्षा संबंधों को नई मजबूती

(जीएनएस)। नई दिल्ली। भारतीय सेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी की हालिया संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) और श्रीलंका यात्रा को भारत की रक्षा कूटनीति के लिहाज से बेहद अहम माना जा रहा है। इस दौरे के माध्यम से न केवल दोनों मित्र देशों के साथ सैन्य और रक्षा सहयोग को नई दिशा मिली, बल्कि पश्चिम एशिया और हिंद महासागर क्षेत्र में भारत की रणनीतिक भूमिका भी और अधिक मजबूत होकर सामने आई है। रक्षा मंत्रालय के अनुसार, इन यात्राओं ने यह स्पष्ट संदेश दिया है कि भारत क्षेत्रीय सुरक्षा, आपसी विश्वास और दीर्घकालिक साझेदारी को लेकर पूरी तरह प्रतिबद्ध है। जनरल उपेंद्र द्विवेदी ने 5 और 6 जनवरी को यूएई तथा 7 और 8 जनवरी को श्रीलंका का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने दोनों देशों के शीर्ष सैन्य और रक्षा नेतृत्व के साथ व्यापक बातचीत की। इन चर्चाओं में द्विपक्षीय रक्षा सहयोग, संयुक्त सैन्य अभ्यास, प्रशिक्षण, क्षमता निर्माण और क्षेत्रीय सुरक्षा से जुड़े अहम मुद्दों पर विचार-विमर्श हुआ। रक्षा मंत्रालय ने अपने बयान में कहा कि यह दौरा केवल औपचारिक शिष्टाचार तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इसमें भविष्य की साझा रणनीतियों और सहयोग के ठोस रास्तों पर भी चर्चा हुई।

यूएई के साथ भारत के रक्षा संबंध पिछले कुछ वर्षों में तेजी से मजबूत हुए हैं। दोनों देश संयुक्त सैन्य अभ्यास, रक्षा प्रशिक्षण और आतंकवाद विरोधी सहयोग में लगातार एक-दूसरे के साथ काम कर रहे हैं। सेना प्रमुख की इस यात्रा के दौरान आपसी सैन्य संपर्क बढ़ाने और रक्षा सहयोग को और विस्तार देने पर जोर दिया गया। पश्चिम एशिया में भारत के लिए यूएई एक महत्वपूर्ण रणनीतिक साझेदार है, ऐसे में इस दौरे ने क्षेत्रीय स्थिरता और सुरक्षा में भारत की भूमिका को और मजबूती प्रदान की है। वहीं श्रीलंका यात्रा को हिंद महासागर क्षेत्र की सुरक्षा के लिहाज से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जा रहा है। भारत और श्रीलंका के बीच ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सामरिक संबंध रहे हैं। हाल के वर्षों में समुद्री सुरक्षा, मानवीय सहायता, आपदा राहत और सैन्य प्रशिक्षण जैसे क्षेत्रों में दोनों देशों का सहयोग लगातार बढ़ा है। सेना प्रमुख की श्रीलंका यात्रा के दौरान इन सभी पहलुओं पर विस्तार से चर्चा हुई और भविष्य में सहयोग को और मजबूत करने पर सहमति बनी। रक्षा मंत्रालय के अनुसार, इस यात्रा से हिंद महासागर क्षेत्र में शांति, स्थिरता और नियम आधारित व्यवस्था को बनाए रखने के लिए भारत की प्रतिबद्धता और स्पष्ट हुई है।

अधिकारियों का कहना है कि इन दोनों यात्राओं से आपसी विश्वास में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। भारत को एक भरोसेमंद, जिम्मेदार और दीर्घकालिक रक्षा साझेदार के रूप में देखा जा रहा है। जनरल द्विवेदी की बातचीत में यह बात विशेष रूप से उभरकर सामने आई कि भारत केवल सैन्य शक्ति के प्रदर्शन में नहीं, बल्कि साझेदार देशों की क्षमताओं को मजबूत करने और क्षेत्रीय सुरक्षा को सामूहिक रूप से सुनिश्चित करने में विश्वास रखता है।

कुल मिलाकर सेना प्रमुख की यूएई और श्रीलंका यात्रा ने भारत की सक्रिय रक्षा कूटनीति को एक बार फिर रेखांकित किया है। इन दौरों से यह संदेश गया है कि भारत अपने मित्र देशों के साथ सहयोग को केवल द्विपक्षीय हितों तक सीमित नहीं रखता, बल्कि व्यापक क्षेत्रीय शांति और स्थिरता के लिए भी काम करता है। आने वाले समय में इन यात्राओं के सकारात्मक परिणाम संयुक्त सैन्य गतिविधियों, रणनीतिक समन्वय और रक्षा सहयोग के नए आयामों के रूप में देखने को मिल सकते हैं।

पहाड़ों से आ रहीं बर्फीली हवाओं ने मैदानों को जकड़ा, शीतलहर और गलन से कांप रहा उत्तर भारत

(जीएनएस)। नई दिल्ली/जयपुर/चंडीगढ़। हिमालयी क्षेत्रों से लगातार आ रही बर्फीली हवाओं ने उत्तर भारत के मैदानी इलाकों में कड़ाके की ठंड बढ़ा दी है। जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड के ऊंचाई वाले इलाकों में तापमान लंबे समय से शून्य से नीचे बना हुआ है, जिसका सीधा असर मैदानी राज्यों पर देखने को मिल रहा है। राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली और पश्चिमी उत्तर प्रदेश समेत अधिकांश क्षेत्रों में शीतलहर का प्रकोप जारी है। ठंडी हवाओं के साथ कहीं-कहीं हुई हल्की बारिश ने ठंड की तीव्रता को और बढ़ा दिया है, जिससे लोगों को गलन वाली सर्दी का तीखा एहसास हो रहा है।

हरियाणा में शुक्रवार को मौसम ने अचानक करवट ली। गुरुग्राम और फरीदाबाद के अलावा पानीपत, भिवानी और झज्जर जैसे जिलों में हल्की बारिश दर्ज की गई। बारिश के बाद ठंडी हवाएं और तेज हो गईं, जिससे न्यूनतम तापमान में कई स्थानों पर पांच डिग्री सेल्सियस तक की गिरावट दर्ज की गई। मौसम विभाग के अनुसार, शनिवार को भी राज्य के 17 जिलों में शीतलहर चलने की चेतावनी जारी की गई है। सुबह और देर रात के समय ठंड का असर अधिक महसूस किया जा रहा है, जिससे आम जनजीवन प्रभावित हो रहा है। राजस्थान में भी सर्दी का असर लगातार बना हुआ है। बीते 24 घंटों के दौरान राज्य के कई हिस्सों में हल्की बारिश दर्ज की गई, जबकि कई क्षेत्रों में घना से अति घना कोहरा छाया रहा। मौसम विभाग के अनुसार, शीतलहर और अति शीत दिन की स्थिति ने प्रदेश के लोगों की मुश्किलें बढ़ा दी हैं। सर्वाधिक बारिश झुंझुनू जिले में 5.0 मिलीमीटर दर्ज की गई। इस दौरान अधिकतम तापमान पाली के जवाई बांध क्षेत्र में 24.4 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया, जबकि न्यूनतम तापमान जैसलमेर में 4.6 डिग्री सेल्सियस तक गिर गया। कई अन्य जिलों में भी रात का तापमान तेजी से नीचे आया है, जिससे सुबह के समय ठिठुरन बढ़ गई है। मौसम वैज्ञानिकों का कहना है कि पहाड़ों पर जारी बर्फबारी और वहां से बह रही ठंडी हवाओं के कारण मैदानी इलाकों में शीतलहर की स्थिति बनी हुई है। उत्तर भारत के बड़े हिस्से में अगले कुछ दिनों तक ठंड से राहत मिलने की संभावना कम है। राजस्थान में आगामी एक सप्ताह मौसम शुष्क रहने की संभावना जताई गई है, हालांकि अगले एक-दो दिनों तक प्रदेश के कुछ हिस्सों में सुबह के समय अति घना कोहरा छाए रहने की चेतावनी दी गई है। दिल्ली और एनसीआर क्षेत्र में भी ठंडी हवाओं के चलते तापमान में गिरावट दर्ज की गई है। दिन के समय धूप निकलने के बावजूद हवा में नमी और ठंडक बनी हुई है, जिससे लोगों को सर्दी से राहत नहीं मिल पा रही है। सुबह और शाम के समय सड़कों पर कोहरे और ठंड के कारण आवाजाही प्रभावित हो रही है। बुजुर्गों, बच्चों और बीमार लोगों को विशेष सावधानी बरतने की सलाह दी गई है।

कुल मिलाकर पहाड़ों से आ रही बर्फीली हवाओं ने पूरे उत्तर भारत को अपनी गिरफ्त में ले लिया है। शीतलहर, कोहरा और हल्की बारिश के इस मेल ने ठंड को और तीखा बना दिया है। मौसम विभाग के अनुसार, फिलहाल ठंड का यह दौर जारी रहने के आसार हैं और लोगों को आने वाले दिनों में भी कड़ाके की सर्दी के लिए तैयार रहना होगा।

संपादकीय

‘तत्वमसि’ में है प्रचारकों की जिंदगी का बयान

देश में हुए सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तनों ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रति सामान्यजन की जिज्ञासा बढ़ा दी है। इस बीच अपनी यात्रा के 100 साल संघ ने पूरे कर लिए हैं। इसलिए संघ की संपर्क गतिविधियां भी सामान्य दिनों से ज्यादा हैं। ऐसे समय में संघ के वरिष्ठ प्रचारक श्रीधर पराड़कर का उपन्यास ‘तत्वमसि’ बड़ी सरलता से आरएसएस के बारे में बताता है। यह उपन्यास एक आत्मकथात्मक उपन्यास भी कहा जा रहा है, जिसके केंद्र में खुद लेखक और उसके अनुभव हैं। बावजूद इसके एक प्रचारक की जिंदगी के बहाने संघ को समझाने में यह उपन्यास पूरी तरह सफल है। कहानियों से चीजों को बताना आसान होता है, विचार कई बार भ्रमित भी करते हैं और उन्हें समझना सबके बस की बात नहीं। उसे वही ग्रहण कर सकता है जिसकी उस विचार विशेष में रुचि हो। शायद इसीलिए पूज्य सरसंघचालक डा. मोहन भागवत इस बात को रेखांकित करते रहे हैं कि “संघ को संघ के भीतर आकर ही समझा जा सकता है।” अपनी स्थापना के समय से ही संघ कुछ शक्तियों के निशाने पर रहा है। खासकर आजाद भारत में उसे इसके दंश कई बार भोगने पड़े। श्रीधर पराड़कर का यह उपन्यास उनके अर्जित अनुभवों का बयान भी है। इसलिए इस कृति की विश्वसनीयता बढ़ जाती है। सही मायनों में यह भोगा हुआ सत्य है, जिसकी अनुभूति इसे पढ़ते समय सहज ही होती है।

हम जानते हैं कि श्रीधर पराड़कर, संघ प्रेरित अखिल भारतीय साहित्य परिषद के राष्ट्रीय संगठन मंत्री रहे हैं और लंबे समय से सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय हैं। एक लेखक,चिंतक,विचारक और संगठनकर्ता के नाते वे राष्ट्रीय स्तर पर ख्यातिलब्ध हैं। ऐसे सरोकारी व्यक्ति का लेखन निश्चित ही बहुत सारे सवालों के जवाब लेकर आता है। किसी भी उपन्यास या कहानी की सबसे बड़ी सफलता है उसकी रोचकता। कहानी को सुनने-पढ़ने का मन होना। कथारस में बहते चले जाना। विचार और संगठन जैसी बोझिल समझी जाने वाली कथा को भी पराड़करजी ने जिस अंदाज में व्यक्त किया है उसने पुस्तक की पठनीयता बनाए रखी है। यह किताब न सिर्फ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विचार तत्व, प्रचारकों की जीवन शैली, संघ के समावेशी चरित्र का बयान करती है बल्कि किस तरह वह समाज परिवर्तन को व्यक्ति परिर्वतन के माध्यम से संभव कर रहा है इसे भी बताती है। उपन्यास के मुख्य पात्र परितोष बाबू संघ के प्रचारक हैं। प्रचारक परंपरा के बारे में समाज में न्यूनतम जानकारियां हैं। इस किताब में ‘प्रचारक परंपरा’ जो सामान्य वस्त्रों में रहकर भी ‘साधु परंपरा’ का पालन करती है का विषद वर्णन है। समाज जीवन में काम करते हुए आने वाली कठिनाइयों से लेकर,समाज के प्रश्नों का उत्तर भी प्रचारक खोजते हैं। भाषा की रवानी और कथा शैली ऐसी कि संगठन शास्त्र जैसे विषयों को किस्सागोई के साथ कहने में लेखक सफल रहे हैं। पत्रकार अनंत विजय ने किताब के फ्लैप पर ठीक ही लिखा है कि-“मेरे जानते हिंदी के किसी लेखक ने किसी संगठन को केंद्र में रखकर इस तरह का उपन्यास नहीं लिखा है। यह अभिनव प्रयोग है, जिसके मोहजाल में पाठक का पड़ना तय है।”

पुस्तक के आरंभ में ही अपनी रेलयात्रा के माध्यम से परितोष बाबू न सिर्फ अपना स्वभाव,विचार रख देते हैं बल्कि समाज को लेकर अपनी सोच को भी प्रकट करते हैं। पहले दृश्य से बांध लेना इसे ही कहते हैं। यह उपन्यास एक कर्मनिष्ठ प्रचारक की जिंदगी से गुजरते हुए समाज के अनेक प्रश्नों के उत्तर भी देता चलता है। इसमें जो पात्र हैं वे बहुत सुनियोजित तरीके से कथा के उद्देश्य को पूरा करने में सहयोग करते हैं। विभिन्न पंथों और विचारों से जुड़े पात्रों का संवाद भी परितोष बाबू से होता है। यहां यह भी प्रकट होता है कि वे व्यक्ति से व्यक्ति का संवाद पसंद करते हैं। मुस्लिम युवा अफरोज से संवाद का अवसर आता है तो वे अपने सहयोगी से कहते हैं,-“ उन्हें बुलाना नहीं हम उनसे मिलने उनके घर जाएंगें।” इससे पता चलता है कि संघ की कार्यपद्धति क्या है। जहां वह व्यक्ति से नहीं बल्कि परिवार से जुड़ता है ताकि उनसे सच्चा जुड़ाव हो सके। उनके सुख-दुख अपने हो जाएं।

यह उपन्यास इस अर्थ में विशिष्ठ है कि यह अपने समय और उसके सवालों से जूझता है। उसके ठोस और वाजिब हल खोजने की कोशिशें भी करता है। संवाद के माध्यम से यह उपन्यास जो कहता है उसे बहुत बड़े वक्तव्यों से नहीं समझाया जा सकता। प्रो. संजय कपूर, विदेशी मूल की युवती नोरा, महेश बाबू, अफरोज,सदानंद, अनिता और स्नेहल जैसे पात्रों के बहाने जो ताना-बाना बुना गया है वह अप्रतिम है।

अज्ञानता को हथियार बनाने के प्रयासों का हो विरोध

“शिक्षक इस तरह से शिक्षा दें कि शिक्षार्थी में रचनात्मकता बढ़े। उसकी आकांक्षाएं एक न्यायपूर्ण, समानता युक्त, मानवीय और पारिस्थितिकी के प्रति संवेदनशील मूल्यों के प्रति विकसित हों। आशा के शिक्षाशास्त्र के जरिये ही नई पीढ़ी अपनी सोच व प्रयासों से बेहतर दुनिया बनाने की दिशा में प्रेरित होगी। शिक्षा मूलतः जाग्रत बुद्धि के बारे में है।

इस भयानक रूप से विषैली, हिंसक और ध्रुवीकृत दुनिया में, किसी के लिए हमारे मौजूदा समय का चरित्र बन चुकी सर्वव्यापी नकारात्मकता से बहक जाना आसान है। फिर भी, एक शिक्षक के रूप में, मुझे लगता है कि हमें हार नहीं माननी चाहिए, और हमें आशा के बीज बोने चाहिए और नई पीढ़ी को एक बेहतर दुनिया की कल्पना करने और उसके लिए प्रयास करने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

मैं शिक्षण समुदाय से हार्दिक प्रार्थना के साथ नए साल की शुरुआत में अपील करता हूं : आशा के शिक्षाशास्त्र को कक्षा की गतिशीलता में बदलने दें, शिक्षा के उद्देश्य को फिर से परिभाषित करें और आलोचनात्मक सोच, रचनात्मक कल्पना, सहानुभूति और प्रेम की शक्ति को सक्रिय करें। हालांकि, यह स्वीकार करना जरूरी है कि समकालीन छात्रों और शिक्षकों में जो निराशा हम देख रहे हैं, वह अक्सर किसी न किसी प्रकार की सनकी व्यावहारिकता के रूप में प्रकट होती है। जैसे-जैसे नवउदारवाद का बाजार-संचालित/ उपकरणवादी तर्क शिक्षा को एक उच्च और महान उद्देश्य से वंचित कर रहा है, और इसे आर्थिक उत्पादकता के लिए मात्र एक तकनीकी कौशल में बदल रहा है, कई युवा सामाजिक डार्विनवाद या अत्यधिक प्रतिस्पर्धा को एक नए गुण के रूप में, पैसे को नए भगवान के रूप में, और अहंकारी गर्व को रुतबे के प्रतीक के तौर पर देखने लगे हैं। उनके आंतरिक जगत में कोई फूल नहीं खिलता;वे शायद ही कभी गांधी और मार्क्स से संवाद करते हैं; और उनके पास समानता, पारिस्थितिकी, शांति एवं न्याय के लिए संघर्ष करने के वास्ते कोई ‘फालतू’ समय नहीं। इस प्रकार की व्यावहारिकता का मतलब है एक नई दुनिया में आशा की अनुपस्थिति।

इसी तरह, अति-राष्ट्रवाद की संस्कृति कई शिक्षकों के बीच ऐसी व्यावहारिकता को और तेज करती है। जैसे-जैसे डिजिटल निगरानी सामान्य होती जाती है, हमारे कॉलेजों-विश्वविद्यालयों में कई शिक्षकों को लगता है कि उन पर लगातार नज़र रखी जा रही है और निगरानी में हैं। और संभवतः, ऐसा डर उन्हें इसके प्रति बेहद सतर्क कर देता है कि वे क्या पढ़ा सकते हैं, क्या बोल सकते हैं और क्या लिख सकते हैं। जैसे-जैसे अति-राष्ट्रवाद के विमर्श द्वारा शैक्षणिक क्षेत्र का उपनिवेशीकरण शिक्षा को उसकी स्वतंत्रतावादी क्षमता से वंचित कर रहा है, शिक्षकों का एक ऐसा बड़ा वर्ग पैदा होना असंभव नहीं है जो चुप रहना पसंद करे, या व्यवस्था के प्रति वफादारी दिखाने के लिए अति उत्साही हो जाए। इसलिए, यह हैरानी की बात नहीं है कि ऐसे ‘व्यावहारिक’ शिक्षक अपने छात्रों में एक नई कल्पना, या प्रतिरोध की भाषा जगाने में विफल रहते हैं। यहां पर, एक ऐसी दुनिया है जो युद्ध, अधिनायकवाद और जलवायु आपातकाल से त्रस्त है। फिर भी, हमारे कॉलेज और विश्वविद्यालय ‘रैंकिंग’ की आकांक्षा, और ‘प्लेसमेंट और सैलरी पैकेज’ की बातों से परे कुछ भी देखने से इनकार करते हैं।

इसलिए, सवाल उठता है : मैं जिस उम्मीद के शिक्षाशास्त्र की बात कर रहा हूं, वह क्या है? और क्या यह सच में मुमकिन है? यहां साफ तौर पर समझ लेना चाहिए कि यह कोई खोखला आदर्श या काल्पनिक खुशफहमी नहीं । आलोचनात्मक शिक्षाशास्त्र के बिना इसे बढ़ावा देना नामुमकिन है : यह उस तरह की शिक्षा है जो युवा शिक्षार्थी को अपना रचनात्मक गुण वापस पाने और उन चीज़ों पर सवाल उठाने के लिए प्रोत्साहित करती है जो एक न्यायपूर्ण, समानता युक्त, मानवीय और पारिस्थितिकी के प्रति संवेदनशील दुनिया की संभावना को नुकसान पहुंचाती हों। यह समझने और गहराई से सिद्धांत बनाने जैसा है, मसलन, चरम-राष्ट्रवाद की आक्रामकता जो युद्ध, नरसंहार, सशस्त्र विद्रोह, आतंकवाद और धार्मिक कट्टरपंथ का कारण बनती है; आधुनिक तकनीक चालित पूंजीवाद के तर्क में छिपा लालच जो हर चीज़ को -चाहे वह पेड़, नदी, जंगल हो या पहाड़- उसे निरंतर ‘संवृद्धि’ और ‘विकास’ की खातिर सिर्फ एक ‘संसाधन’ में बदल देता है, और जलवायु आपदा की भयानक स्थितियों की ओर ले जाता है; और सबसे बढ़कर है, अरबपति प्रौद्योगिकीवादी और नव-फासीवादियों का अपवित्र गठबंधन जो लोकतंत्र की भावना खत्म कर रहा है।

इसके अलावा, उम्मीद के शिक्षाशास्त्र का अर्थ है कि शिक्षा को सिर्फ एक तकनीकी कौशल तक सीमित नहीं किया जा सकता; इसकी बजाय यह जाग्रत समझ के बारे में है, या वह, जिसे हेनरी गिरौक्स –जो बेहतरीन शिक्षाविदों में से एक हैं - ने जानकारी से युक्त एवं राजनीतिक रूप से जागरूक लोकतांत्रिक नागरिकों को तैयार करने हेतु एक परिवर्तनकारी औजार के रूप में बताया है। अज्ञानता को हथियार बनाने का विरोध करने का यही एकमात्र तरीका है।

आलोचनात्मक चिंतन के अलावा, उम्मीद के शिक्षाशास्त्र को कुछ और भी चाहिए। वो है सीखने का ऐसा तरीका जो सीखने वाले हर युवा की छिपी हुई क्षमता को जगाए - यानी एक नई दुनिया का सपना देखने की हिम्मत; ज्ञान और आचार को जोड़ने, सोच और भावना, और विज्ञान और सौंदर्यशास्त्र को एक साथ लाने की इच्छा। एक तरह से, यह आलोचना की शक्ति और प्यार एवं दयालुता से सुनने की संभावना को एक साथ लाने की कोशिश करता है। असल में, उम्मीद के शिक्षाशास्त्र के हर गंभीर समर्थक को पाउलो फ्रेयरे और बेल हुक्स, रवींद्रनाथ टैगोर और जिद्दू कृष्णमूर्ति, या मार्टिन लूथर किंग (जूनियर) और थिच न्हाट हान के साथ लगातार संवाद में शामिल होने की ज़रूरत है। एक सेवानिवृत्त प्रोफेसर होने के बावजूद, मैं युवाओं से वार्तालाप करता हूं, और उनकी दुविधाओं, चिंताओं और उलझनों को समझता हूं। और मुझे उनके साथ दूसरी कहानियां साझा करना पसंद है- बेशक, तय पाठ्यक्रम से इतर। सांप्रदायिक रूप से बंटी हुई दुनिया में, मैं उन्हें महात्मा गांधी के नोआखली के दिनों (1946-47) की कहानियां सुनाता हूं, और लोगों के दिलों में अच्छाई जगाने, सांप्रदायिक हिंसा से लड़ने, और प्यार, सहानुभूति और अलग-अलग धर्मों में परस्पर संवाद का संदेश फैलाने के उनके अथक प्रयास के बारे में बताता हूं। ऐसी दुनिया में जो इंसान की क्रूर प्रवृत्ति का जश्न मनाती हो, मैं उनके साथ बैठता हूं, और जॉन लेनन का यह ज्ञानवर्धक गाना सुनता हूं : ‘आप कह सकते हैं कि मैं एक स्वप्नद्रष्टा हूं/लेकिन मैं अकेला नहीं हूं/मुझे उम्मीद है कि किसी दिन आप हमसे जुड़ेंगे/और दुनिया एक बनकर साथ रहेगी’।

और ऐसी दुनिया में जहां उपभोगवाद सबसे पसंदीदा सिद्धांत है, और ‘विकास’ सबसे ज़्यादा नशा करने वाली चीज़ है, मुझे उनके साथ हेनरी डेविड थोरो की उत्कृष्ट रचना ‘वाल्डेन’ पढ़ना पसंद है, और प्रकृति के प्रति उनकी संवेदनशीलता, सादगी और काव्यात्मक विस्मय का अनुभव करना पसंद है।

आज जबकि इस तकनीक-परक दुनिया में, सोशल मीडिया का नशा एक व्याकुल पीढ़ी को जन्म दे रहा है, और यहां तक कि हमारे नीति निर्माता भी तीसरी कक्षा से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) की पढ़ाई शुरू करने की योजना बना रहे हैं, तो मैं जिद्दू कृष्णमूर्ति का आह्वान करना चाहता हूं, और उनसे आग्रह करता हूं कि वे बारिश की बूंदों को या सूर्यास्त के अद्भुत नज़ारे को निहारें, और महसूस करें कि संवेदनशीलता ही बुद्धि का उच्चतम स्वरूप है।

शिक्षण समुदाय उम्मीद के शिक्षाशास्त्र को न भूले।

प्रेरणा

जिसने स्वयं को जीता, वही सच्चा सम्राट

इतिहास के पन्नों में सम्राट अशोक का नाम केवल विशाल साम्राज्य, अपार सेना और स्वर्णिम वैभव के लिए नहीं जाना जाता, बल्कि उस आंतरिक परिवर्तन के लिए जाना जाता है जिसने एक विजेता को महापुरुष बना दिया। एक दिन अशोक अपने साम्राज्य का निरीक्षण कर रहे थे। चारों ओर राजसी ठाठ, सैनिकों की टुकड़ियां, हाथी-घोड़े, मंत्री और दरबारी साथ थे। उसी यात्रा के दौरान उनकी दृष्टि एक बौद्ध भिक्षु पर पड़ी, जो शांत भाव से मार्ग के किनारे बैठा था। उसके पास न तो वस्त्रों की भव्यता थी, न धन का आडंबर, न सुरक्षा के लिए कोई प्रहरी। उसके हाथ में केवल एक साधारण सा मिट्टी का कटोरा था, और चेहरे पर ऐसी शांति थी, जैसी अशोक ने अपने महलों में भी कभी नहीं देखी थी।

अशोक ने रुककर उससे प्रश्न किया, “तुम्हारे पास इतना ही है?” प्रश्न में आश्चर्य भी था और कहीं न कहीं एक राजसी अहं भी। भिक्षु ने मुस्कराकर उत्तर दिया, “महाराज, इससे अधिक मेरी आवश्यकता नहीं।” यह वाक्य साधारण था, पर उसका प्रभाव असाधारण। यह शब्द अशोक के कानों से होते हुए सीधे उनके हृदय में उतर गए। उस क्षण अशोक ने अपने जीवन की तुलना उस भिक्षु से की। उनके पास असीम सत्ता थी, सीमाओं तक फैला साम्राज्य था, सेनाओं का बल था, स्वर्ण और रत्नों से भरे कोष थे, फिर भी भीतर कहीं अशांति थी। विजय के बाद भी मन में भय था, संदेह था, क्रोध था, और सबसे बढ़कर एक अंतहीन खालीपन था। दूसरी ओर सामने खड़ा वह भिक्षु, जिसके पास लगभग कुछ भी नहीं था, पूर्ण शांति में स्थित था। यहीं से अशोक के भीतर प्रश्न उठने लगा—यदि सत्ता, धन और विजय ही सुख का मार्ग होते, तो यह भिक्षु इतना शांत कैसे हो सकता था? और यदि ये सब होते हुए भी मन अशांत है, तो वास्तव में कमी कहां है? पहली बार अशोक को यह बोध हुआ कि उन्होंने अब तक जितनी भी विजय प्राप्त की है, वे सब बाहरी थीं। नगर जीते, राज्य जीते, शत्रु पराजित किए, पर स्वयं को नहीं जीत पाए। उस दिन अशोक को समझ आया कि सबसे कठिन युद्ध भीतर का होता है और सबसे महान विजय आत्म-विजय होती है। यह अनुभव किसी उपदेश से नहीं आया, न किसी ग्रंथ के अध्ययन से, बल्कि एक साधारण दृश्य और एक सच्चे वाक्य से आया। भिक्षु ने कोई प्रवचन नहीं दिया, कोई दर्शन नहीं समझाया, फिर भी उसका जीवन स्वयं में एक जीवंत शिक्षा था। उसी क्षण अशोक के भीतर परिवर्तन का बीज पड़ गया। उन्होंने महसूस किया कि शक्ति का वास्तविक अर्थ दूसरों को डराना नहीं, बल्कि उन्हें सुरक्षित महसूस कराना है। शासन का अर्थ दमन नहीं, सेवा है। कानून का उद्देश्य भय पैदा करना नहीं, बल्कि विश्वास जगाना है।

इसके बाद अशोक का जीवन धीरे-धीरे बदलने लगा। वही सम्राट, जो कभी युद्धभूमि में रक्त की नदियां बहा चुका था, अब हिंसा से घृणा करने लगा। कलिंग युद्ध के बाद जो पश्चाताप उनके हृदय में उत्पन्न हुआ, वह इसी आंतरिक बोध का विस्तार था। उन्होंने महसूस किया कि तलवार से जीता गया राज्य भले ही बड़ा हो, पर प्रेम और करुणा से जीता गया हृदय कहीं अधिक मूल्यवान होता है। उन्होंने अपने शासन की दिशा बदल दी। दंड के स्थान पर सुधार, कठोरता के स्थान पर करुणा और अहंकार के स्थान पर विनम्रता को अपनाया।

अशोक ने यह समझ लिया था कि जो व्यक्ति सब कुछ होते हुए भी संतुष्ट नहीं है, वह वास्तव में निर्धन है। और जो कम में संतुष्ट है, जिसकी आवश्यकताएं सीमित हैं, वही सच्चे अर्थों में समृद्ध है। यही कारण है कि उन्होंने भौतिक विजय से अधिक नैतिक विजय को महत्व दिया। उन्होंने धर्म को किसी संप्रदाय के रूप में नहीं, बल्कि मानवीय मूल्यों के रूप में अपनाया। उनके लिए धर्म का अर्थ था—अहिंसा, दया, सत्य और सेवा।

उस भिक्षु के मिट्टी के कटोरे में अशोक ने एक पूरा दर्शन देख लिया था। वह कटोरा प्रतीक था उस जीवन का, जिसमें आवश्यकता और लालसा के बीच संतुलन था। अशोक ने जाना कि लालसा ही दुख का मूल है। जितनी अधिक इच्छाएं, उतनी अधिक अशांति। और जितनी कम आवश्यकताएं, उतनी अधिक शांति। यह बोध किसी सम्राट को साधारण मनुष्य से महान बनाता है।

इतिहास गवाह है कि अशोक का नाम आज भी सम्मान के साथ लिया जाता है, न कि केवल उसके साम्राज्य के कारण, बल्कि उसके चरित्र के कारण। जिन सम्राटों ने केवल भूमि जीती, वे समय के साथ विस्मृत हो गए। पर जिसने स्वयं को जीता, उसकी स्मृति युगों तक जीवित रहती है। अशोक ने यह सिद्ध कर दिया कि वास्तविक सम्राट वही है, जो अपने मन पर शासन कर सके। जिसके भीतर करुणा का सिंहासन हो और अहंकार का अंत।

इस कथा का संदेश आज भी उतना ही प्रासंगिक है। आज भी मनुष्य बाहरी सफलताओं के पीछे भाग रहा है—पद, पैसा, प्रतिष्ठा—पर भीतर की शांति खोता जा रहा है। अशोक और उस भिक्षु की भेंट हमें यह याद दिलाती है कि सुख का स्रोत बाहर नहीं, भीतर है। जो अपने भीतर संतोष पा ले, वही सच्चा विजेता है। और जिसके पास सब कुछ होते हुए भी शांति नहीं, वह चाहे जितना बड़ा क्यों न दिखे, भीतर से खाली ही रहता है।

Iran सुलग रहा है, सत्ता कांप रही है, जनता का डर खत्म हो रहा है, क्या इस्लामी शासन के दिन पूरे हो गये?

ईरान इस समय उबाल पर है। जो विरोध महंगाई, बेरोजगारी और बदहाल अर्थव्यवस्था के खिलाफ शुरू हुआ था वह अब सीधे इस्लामी सत्ता व्यवस्था को उखाड़ फेंकने की चुनौती बन चुका है। लगातार बारह दिनों से सड़कों पर उतर रही जनता अब केवल नारे नहीं लगा रही बल्कि सत्ता के प्रतीकों को जलाकर यह साफ संदेश दे रही है कि डर की दीवार टूट चुकी है। सरकारी इमारतें, पुलिस चौकियां और प्रशासनिक वाहन जनता के गुस्से का निशाना बन रहे हैं। यह केवल प्रदर्शन नहीं है, यह व्यवस्था के खिलाफ खुला विद्रोह है। तेहरान से लेकर मशहद, इस्फहान और दर्जनों छोटे शहरों तक हालात एक जैसे हैं। सड़कों पर युवा हैं, महिलाएं हैं, मजदूर हैं और अब मध्यम वर्ग भी खुलकर सामने आ चुका है। नारे अब रोटी कपड़ा और नौकरी तक सीमित नहीं रहे। सीधे सर्वोच्च नेता और पूरी इस्लामी व्यवस्था को ललकारा जा रहा है। सत्ता के खिलाफ इस तरह की खुली बगावत ईरान के इतिहास में बहुत कम देखी गई है।

हालांकि ईरान सरकार का जवाब भी उतना ही सख्त और बेरहम है। इंटरनेट बंद, मोबाइल सेवाएं ठप, सुरक्षा बलों को खुली छूट और गिरफ्तारियों का अंधाधुंध दौर चल रहा है। दर्जनों मौतें हो चुकी हैं और हजारों लोग जेलों में ठूंस दिए गए हैं। सत्ता यह दिखाना चाहती है कि वह अब भी मजबूत है, लेकिन हकीकत यह है कि डर के बल पर चलने वाली किसी भी व्यवस्था का अंत हमेशा हिंसक होता है।

हम आपको यह भी बता दें कि इन हालात के बीच रेजा पहलवी का नाम फिर से उभर रहा है। वह ईरान के आखिरी शाह के बेटे हैं और खुद को देश का वैध क्राउन प्रिंस मानते हैं। हम आपको याद दिला दें कि 1979 की इस्लामी क्रांति के बाद उनका परिवार देश छोड़ने पर मजबूर हुआ था। तब से वह निर्वासन में हैं और खुद को लोकतंत्र और धर्मनिरपेक्ष ईरान का चेहरा बताने की कोशिश कर रहे हैं। रेजा पहलवी खुले तौर पर मौजूदा सत्ता को अवैध बताते हैं और सेना तथा जनता से अपील कर रहे हैं कि वह इस्लामी नेतृत्व का साथ छोड़ दें। उनके समर्थक उन्हें ईरान के लिए एक वैकल्पिक नेतृत्व के रूप में पेश कर रहे हैं। लेकिन सवाल यह है कि क्या यह सिर्फ भावनात्मक अपील है या वाकई सत्ता परिवर्तन का कोई ठोस खाका है। सवाल यह भी है कि क्या ईरान में तख्तापलट होने वाला है?

देखा जाये तो यह सवाल इस समय हर विश्लेषण का केंद्र बना हुआ है। मगर सच्चाई यह है कि ईरान में हालात गंभीर जरूर हैं लेकिन तख्तापलट के लिए संगठित नेतृत्व, सेना का समर्थन और सत्ता संरचना के भीतर दरार जरूरी होती है। फिलहाल जो दिख रहा है वह जनता का गुस्सा है, लेकिन वह गुस्सा बिखरा हुआ है। कोई एक केंद्रीकृत नेतृत्व नहीं है जो सत्ता संभालने की स्थिति में हो। रेजा पहलवी की लोकप्रियता सोशल मीडिया और प्रवासी ईरानियों में जरूर है, लेकिन देश के भीतर उनके पास न तो संगठन है और न ही जमीन पर नियंत्रण। ईरान की सुरक्षा व्यवस्था बेहद मजबूत और वैचारिक रूप से कट्टर है। रिवोल्यूशनरी गार्ड केवल सेना नहीं बल्कि सत्ता की भी रीढ़ हैं। जब तक इस ढांचे में टूट नहीं होती तब तक तख्तापलट की बात करना जल्दबाजी होगी।

जहां तक यह सवाल है कि क्या राजशाही की वापसी संभव है तो आपको बता दें कि राजशाही की वापसी एक और भावनात्मक कल्पना है। आज का ईरान 1979 वाला ईरान नहीं है। चार दशक की इस्लामी सत्ता ने समाज की संरचना बदल दी है। नई पीढ़ी स्वतंत्रता चाहती है लेकिन जरूरी नहीं कि वह किसी शाह को फिर से गद्दी पर बैठाना चाहती हो। रेजा पहलवी खुद भी खुलकर यह नहीं कहते कि वे राजा बनेंगे। वह सत्ता को जनता के हवाले करने और जनमत संग्रह की बात करते हैं। इसका मतलब साफ है कि राजशाही की वापसी फिलहाल एक नारा भर है, हकीकत नहीं।

ईरान संकट का सामरिक प्रभाव देखें तो इसमें कोई दो राय नहीं कि ईरान पूरे पश्चिम एशिया की धुरी है। यहां अस्थिरता का मतलब है तेल बाजार में उथल पुथल, खाड़ी क्षेत्र में तनाव और कई देशों में प्रॉक्सी संघर्ष का तेज होना। ईरान के कमजोर होने से उसके समर्थित गुटों की स्थिति भी बदलेगी। इससे इजराइल और अरब देशों के बीच संतुलन बदल सकता है। अमेरिका और पश्चिमी शक्तियां इस मौके को अपने हित में भुनाने की कोशिश करेंगी। दूसरी ओर रूस और चीन भी ईरान को हाथ से जाने नहीं देना चाहेंगे। अगर ईरान में सत्ता परिवर्तन होता है तो उसका असर केवल तेहरान तक सीमित नहीं रहेगा। यह पूरे क्षेत्र को हिला देगा और वैश्विक ऊर्जा सुरक्षा को भी झटका देगा।

देखा जाये तो ईरान में जो हो रहा है वह केवल सत्ता के खिलाफ गुस्सा नहीं बल्कि दशकों की घुटन का विस्फोट है। जनता अब सुधार नहीं बल्कि बदलाव चाहती है। लेकिन बदलाव अपने आप नहीं आता, उसे दिशा देनी पड़ती है। रेजा पहलवी इस विद्रोह का चेहरा बन सकते हैं, लेकिन वह मसले का समाधान नहीं हैं। सत्ता परिवर्तन के लिए केवल नाम नहीं बल्कि जमीन पर ताकत चाहिए। अगर यह विद्रोह संगठित नहीं हुआ तो सत्ता इसे बेरहमी से कुचल देगी।

बहरहाल, ईरान आज चौराहे पर खड़ा है। एक रास्ता दमन का है, दूसरा बदलाव का। तख्तापलट होगा या नहीं यह आने वाले दिनों में तय होगा, लेकिन इतना तय है कि ईरान अब पहले जैसा नहीं रहेगा। डर टूट चुका है और यही किसी भी सत्ता के पतन की पहली सीढ़ी होती है।

अभियान

आरती की गूंज में छिपा वरदान: गणेश जी की आरती से कैसे खुलते हैं सौभाग्य और सिद्धि के द्वार

भगवान गणेश को भारतीय सनातन परंपरा में केवल एक देवता नहीं, बल्कि हर शुभ आरंभ की आत्मा माना गया है। विघ्नहर्ता के रूप में उनका स्मरण करते ही मन में यह विश्वास जागता है कि जो अटका है, वह सुलझेगा; जो रुका है, वह आगे बढ़ेगा। किसी भी शुभ कार्य से पहले गणेश पूजन की परंपरा केवल धार्मिक आस्था नहीं, बल्कि एक गहन मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक प्रक्रिया भी है। इसी प्रक्रिया का सबसे महत्वपूर्ण और प्रभावशाली चरण है भगवान गणेश की आरती। कहा जाता है कि पूजा आरती के बिना अधूरी है, क्योंकि आरती ही वह क्षण है जब साधक की भावना शब्द, स्वर और प्रकाश के माध्यम से सीधे देवत्व से जुड़ती है।

आरती का अर्थ केवल दीप घुमाना नहीं है। आरती वास्तव में अहंकार, भय, संशय और नकारात्मकता को प्रकाश के चारों ओर घुमा-घुमाकर भस्म कर देने की साधना है। जब भक्त पूरे मनोयोग से “जय गणेश जय गणेश, जय गणेश देवा” का उच्चारण करता है, तो वह केवल स्तुति नहीं कर रहा होता, बल्कि अपने भीतर बैठे विघ्नों को चुनौती दे रहा होता है। गणेश जी की आरती करते समय जो कंपन उत्पन्न होता है, वह वातावरण ही नहीं, साधक के मन और शरीर पर भी गहरा प्रभाव डालता है।

गणेश जी की आरती का सबसे बड़ा लाभ यह माना जाता है कि यह जीवन में आने वाली बाधाओं को धीरे-धीरे समाप्त करती है। बहुत से लोग यह अनुभव करते हैं कि नियमित रूप से गणेश आरती करने से अटके हुए काम अपने आप गति पकड़ने लगते हैं। इसके पीछे केवल आस्था ही नहीं, बल्कि मन की स्थिरता भी एक बड़ा कारण है। जब व्यक्ति रोज एक निश्चित समय पर आरती करता है, तो उसका मन अनुशासन में आता है, विचार स्पष्ट होते हैं और निर्णय क्षमता मजबूत होती है। यही मानसिक स्पष्टता जीवन की उलझनों को सुलझाने में सहायता करती है।

गणेश जी को बुद्धि और विवेक का देवता माना गया है। उनकी आरती करने से बुद्धि की तीव्रता बढ़ती है और सोच में स्थिरता आती है। विद्यार्थियों के लिए यह विशेष रूप से लाभकारी मानी जाती है। कहा जाता है कि जो विद्यार्थी नियमित रूप से गणेश आरती करता है, उसकी एकाग्रता बढ़ती है, स्मरण शक्ति मजबूत होती है और परीक्षा या प्रतियोगिता के समय भय कम होता है। यह भय का कम होना ही सफलता की पहली सीढ़ी है, क्योंकि भय मनुष्य को भीतर से कमजोर करता है।

गणेश आरती का एक और अद्भुत लाभ यह है कि यह घर के वातावरण को सकारात्मक ऊर्जा से भर देती है। जब घर में दीपक की लौ, घंटियों की ध्वनि और भक्तिपूर्ण शब्द एक साथ गूंजते हैं, तो वहां की नकारात्मक ऊर्जा स्वतः ही शांत होने लगती है। जिन घरों में अक्सर कलह, तनाव या अनावश्यक चिंता बनी रहती है, वहां नियमित रूप से गणेश जी की आरती करने से धीरे-धीरे शांति का अनुभव होने लगता है। यह शांति किसी जादू से नहीं, बल्कि मन और वातावरण के सामंजस्य से उत्पन्न होती है।

आर्थिक दृष्टि से भी गणेश जी की आरती को अत्यंत शुभ माना गया है। भगवान गणेश को शुभ-लाभ का दाता कहा जाता है। उनकी आरती करते समय जब भक्त “धन्य धन्य हे गणराजा” जैसे भावों के साथ उन्हें स्मरण करता है, तो वह अपने भीतर समृद्धि के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करता है। कई लोग अनुभव करते हैं कि नियमित आरती से आर्थिक रुकावटें कम होती हैं, खर्चों पर नियंत्रण आता है और आय के नए मार्ग खुलने लगते हैं। यह सब अचानक नहीं होता, बल्कि सोच में आए बदलाव के साथ धीरे-धीरे जीवन में उतरता है।

गणेश जी की आरती का एक गहरा आध्यात्मिक लाभ यह भी है कि यह अहंकार को कम करती है। आरती के समय जब भक्त दीपक को भगवान के सामने घुमाता है, तो प्रतीकात्मक रूप से वह यह स्वीकार करता है कि सारा प्रकाश, सारी शक्ति और सारी सिद्धि परम सत्ता से ही आती है। यह भाव मनुष्य को विनम्र बनाता है। विनम्रता ही वह गुण है जो मनुष्य को भीतर से मजबूत करता है और उसे सही मार्ग पर बनाए रखता है।

मानसिक तनाव, चिंता और अवसाद से जूझ रहे लोगों के लिए भी गणेश आरती एक प्रभावी साधना मानी गई है। जब मन अशांत होता है, तब तर्क काम नहीं करता, लेकिन भक्ति सीधे मन के गहरे स्तर को स्पर्श करती है। आरती के समय उत्पन्न लयबद्ध ध्वनि और प्रकाश मन को धीरे-धीरे स्थिर करते हैं। कई लोगों का अनुभव है कि दिनभर की थकान और मानसिक बोझ आरती के बाद हल्का महसूस होने लगता है। यह अनुभव किसी दवा से नहीं, बल्कि आत्मिक संतुलन से आता है।

गणेश जी की आरती विशेष रूप से तब और प्रभावशाली मानी जाती है जब इसे पूरे परिवार के साथ किया जाए। सामूहिक आरती से परिवार के सदस्यों के बीच भावनात्मक जुड़ाव बढ़ता है। बच्चे जब माता-पिता के साथ आरती करते हैं, तो उनके भीतर संस्कार स्वतः ही विकसित होते हैं। वे अनुशासन, श्रद्धा और सामूहिकता का महत्व सीखते हैं। यह संस्कार आगे चलकर उनके जीवन की नींव बनते हैं।

यह भी कहा जाता है कि गणेश जी की आरती करने से मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं, लेकिन यहां यह समझना आवश्यक है कि मनोकामना पूर्ति का अर्थ केवल भौतिक इच्छाएं नहीं है। कई बार हम जो चाहते हैं, वह हमारे लिए उचित नहीं होता। गणेश जी की कृपा से वही मिलता है जो हमारे जीवन के लिए सही होता है। इसलिए कई भक्त यह अनुभव करते हैं कि आरती के बाद उनकी इच्छाएं बदलने लगती हैं। वे छोटी-छोटी बातों में संतोष खोजने लगते हैं, और यही संतोष वास्तविक सुख का आधार बनता है।

गणेश आरती का प्रभाव तभी पूर्ण रूप से मिलता है जब उसे श्रद्धा, नियमितता और शुद्ध भाव से किया जाए। केवल औपचारिकता निभाने के लिए की गई आरती उतना प्रभाव नहीं डालती, जितनी हृदय से की गई साधना। जब भक्त यह मानकर आरती करता है कि गणेश जी उसके अपने हैं, उसके मार्गदर्शक हैं, तब वह संबंध जीवंत हो उठता है।

अंततः गणेश जी की आरती हमें यह सिखाती है कि जीवन में प्रकाश बाहर से नहीं, भीतर से जलाना होता है। दीपक की लौ केवल प्रतीक है, असली दीपक हमारा विवेक है। जब वह जलता है, तब विघ्न अपने आप दूर होने लगते हैं। जो व्यक्ति नियमित रूप से गणेश जी की आरती करता है, वह धीरे-धीरे यह अनुभव करता है कि समस्याएं पूरी तरह समाप्त भले न हों, लेकिन उनसे जूझने की शक्ति अवश्य बढ़ जाती है। और यही गणेश जी की सबसे बड़ी कृपा है—जीवन को आसान नहीं, बल्कि सक्षम बना देना।

RNI No. GJHIN/25/A2786 Printed, Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, “Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, “Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424. Editor : JIGNESHKUMAR PATHABHAI VAGHELA
Regd.Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424 Gujarat,India. Phone : (o) 7698333307 (M) 8485951747,7096333307
Email:navsarjansanskruti2016@gmail.com*navsarjansanskruti2016@yahoo.com*Website : www.navsarjansanskruti.com

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की उपस्थिति में नवगठित शामलाजी तहसील में विकास उत्सव मनाया गया

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने शुक्रवार को प्रसिद्ध तीर्थक्षेत्र शामलाजी में मनाए जा रहे शामलाजी महोत्सव का समापन करते हुए अरवल्ली जिले को 168 करोड़ रुपए के विभिन्न विकास कार्यों की सौगात दी।

राज्य सरकार द्वारा हाल ही में शामलाजी को नई तहसील घोषित करने के बाद मुख्यमंत्री का यह पहला कार्यक्रम शामलाजी महोत्सव पूरे अरवल्ली जिले के लिए विकास उत्सव बन गया।

मुख्यमंत्री ने राज्य सरकार द्वारा अरवल्ली जिले के लिए पिछले तीन वर्षों में स्वीकृत किए गए 1232 करोड़ रुपए के विकास कार्यों की जानकारी देते हुए कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने सुदूरवर्ती क्षेत्रों और वंचितों को विकास की मुख्यधारा में शामिल करने के लिए विकास कार्यों में कभी धन की कमी नहीं पड़ने दी है।

▸▸ प्रसिद्ध यात्राधाम शामलाजी में शामलाजी महोत्सव के समापन अवसर पर मुख्यमंत्री की प्रेरक उपस्थिति

▸▸ शामलाजी मंदिर में दर्शन और पूजा-अर्चना की

▸▸ अरवल्ली जिले को 168 करोड़ रुपए के विभिन्न विकास कार्यों की सौगात दी

उन्होंने यह भी कहा कि प्रधानमंत्री ने 'विकास भी, विरासत भी' मंत्र से धार्मिक और ऐतिहासिक स्थलों की दिव्यता एवं भव्यता को बनाए रखते हुए आधुनिक विकास करने का दृष्टिकोण साकार किया है।

उन्होंने साफ कहा कि जनजातीय क्षेत्रों को आवास, अभ्यास (शिक्षा), आजीविका और आरोग्य की सुविधाएं उपलब्ध कराई हैं। सामूहिक स्वास्थ्य केंद्रों को अपग्रेड कर उप जिला अस्पताल बनाए जा रहे हैं।

इतना ही नहीं, उन्होंने कहा कि इन जनजातीय क्षेत्रों में 12 साइंस कॉलेज, 2 यूनिवर्सिटी और 11 मेडिकल कॉलेजों के शुरू होने से आदिवासी परिवारों की संतानों के लिए भी डॉक्टर और इंजीनियर बनने की दिशा खुली है।

मुख्यमंत्री ने विकसित भारत और आत्मनिर्भर भारत के संकल्प को पूरा करने के लिए आदिवासियों की परंपरागत कला, कौशल, पेशों और उत्पादनों को वोकल फॉर लोकल और लोकल फॉर ग्लोबल के माध्यम से प्रोत्साहन देने का भी आह्वान किया। मंत्री श्री रमणभाई सोलंकी ने इस अवसर पर कहा कि मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में गुजरात ने अभूतपूर्व विकास किया है। विशेषकर, अरवल्ली जिले के आदिवासी क्षेत्रों में राज्य और केंद्र सरकार की योजनाओं से शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और आजीविका के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति हो रही है। राज्य मंत्री श्री पी.सी. बरंडा ने कहा कि शामलाजी महोत्सव आदिवासी समुदाय की एकता, संस्कृति और आस्था का जीवंत प्रतीक है और इस वर्ष हजारों लोगों की भागदारी और कलाकारों के लोकसंगीत, नृत्य एवं भक्तिमय वातावरण से समुदाय की विरासत और अधिक मजबूत बनी है।

उन्होंने कहा कि आज मिले विकास कार्यों और लोकार्पण से अरवल्ली के विकास को और गति मिलेगी। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने सड़क एवं भवन विभाग (राज्य) की 107.02 करोड़ रुपए की परियोजनाओं, शिक्षा विभाग की 24.49 करोड़ रुपए की परियोजनाओं, खेल विभाग की 19.9 करोड़ रुपए की परियोजनाओं, सड़क एवं भवन विभाग (पंचायत) की 12.5 कोरड़ रुपए की परियोजनाओं और स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग की 3.46 करोड़ रुपए की परियोजनाओं सहित विभिन्न परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास किया।

उन्होंने घुमंतू और विमुक्त जाति के परिवारों को भूखंड आवंटन के आदेश और किशन मिशन मंगलम समूह को कैश क्रेडिट सहायता वितरण किया।

कार्यक्रम में जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती प्रियंका डामोर, सांसद श्रीमती शोभनाबेन बारैया, विधायक सर्वश्री भीखूसिंहजी परमार, धवलसिंह झाला, जिला प्रभारी सचिव श्री रूपवंत सिह, जिला कलेक्टर श्री प्रशस्ति पारिक, जिला विकास अधिकारी श्री दीपेश केडिया, जिला पुलिस अधीक्षक श्री मनोहरसिंह जाडेजा सहित कई अधिकारी और पदाधिकारी उपस्थित रहे।

सोमनाथ स्वाभिमान पर्व में शामिल होने के लिए विशेष ट्रेन से पहुंचे शिव भक्तों का वेरावल स्टेशन पर गर्मजोशी से स्वागत

▸▸ राजकोट, सूरत, वडोदरा और अहमदाबाद से ट्रेन के जरिए पहुंचे यात्रियों का ढोल-नगाड़ों, शहनाई और पारंपरिक गरबे से स्वागत

▸▸ प्रभास की धरती पर सूर्योदय की पहली किरण के साथ स्टेशन परिसर 'हर हर महादेव' और 'जय सोमनाथ' के नाद से गूंज उठा

(जीएनएस)। गांधीनगर : 8 से 11 जनवरी के दौरान आयोजित हो रहे भारत की आध्यात्मिक आस्था के प्रतीक 'सोमनाथ स्वाभिमान पर्व' के अंतर्गत राज्य सरकार द्वारा शिव भक्त श्रद्धालुओं के लिए विशेष आयोजन किया गया है। इसके अंतर्गत राजकोट, सूरत, अहमदाबाद और वडोदरा जैसे शहरों से सोमनाथ आने को इच्छुक श्रद्धालुओं के लिए विशेष ट्रेनों की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। पवित्र सोमनाथ धाम में आने वाले श्रद्धालुओं की सुलभ, सुरक्षित और अनुकूल यात्रा के लिए सरकार की ओर से योजनाबद्ध व्यवस्था की गई है।

सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के अवसर पर वेरावल रेलवे स्टेशन पर विशेष स्वागत कार्यक्रम आयोजित हुआ। विभिन्न शहरों से ट्रेन के माध्यम से पहुंचे शिव भक्त श्रद्धालुओं का कुमकुम तिलक लगाकर तथा पुष्पगुच्छ भेंट कर ढोल-नगाड़ों, शहनाई और पारंपरिक गरबे के जरिए हर्षोल्लास के साथ स्वागत किया गया। इस स्वागत कार्यक्रम में भक्तिभाव, आत्मीयता और सोमनाथ के प्रति अडिग आस्था का भाव स्पष्ट रूप से देखने को मिला।

प्रभास भूमि पर 9 जनवरी को सूर्योदय की पहली किरण के दौरान वेरावल स्टेशन परिसर यात्रियों के 'हर हर महादेव-जय सोमनाथ' के नाद से गूंज उठा।

गुजरात राज्य सड़क परिवहन निगम की ओर से स्टेशन से मंदिर तक जाने और वापस स्टेशन लौटने के लिए विशेष बसों की व्यवस्था की गई है, जिससे राजकोट, सूरत, अहमदाबाद और वडोदरा से बड़ी संख्या में श्रद्धालु सोमनाथ के दर्शन कर सकते हैं।

विशेष ट्रेन सुविधा के चलते शिव भक्तों को समय पर और आरामदायक यात्रा की सुविधा मिल रही है।

सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के अंतर्गत श्रद्धालुओं के लिए आवागमन, मार्गदर्शन और प्रबंधन सहित विभिन्न सुविधाओं का सुचारु रूप से संचालन किया जा रहा है।

श्रद्धालुओं को वेरावल रेलवे स्टेशन से सोमनाथ मंदिर तक पहुंचने में आसानी और सहुलियत हो, इसके लिए समन्वित आयोजन किया गया है।

यात्रियों की प्रतिक्रिया

इस बारे में तापी जिले के श्री अक्षय पंचाल ने कहा कि उन्हें उपलब्ध कराई गई सुविधाओं के कारण अच्छी तरह से दर्शन हो पाएगा। इस अवसर में सहभागी होने का उन्हें बहुत आनंद है।

सूरत निवासी श्री हेलीबेन राठोड़ ने कहा कि यहां ट्रेन में यात्रा के दौरान बेहतर सुविधाएं मिलीं। स्टेशन से मंदिर तक जाने के लिए बस की व्यवस्था है, जिससे आसानी से दर्शन हो सकेगा।

बीसीसीएल का आईपीओ बाजार में उतरा, निवेशकों के लिए 13 जनवरी तक खुला रहेगा मौका

(जीएनएस)। नई दिल्ली। कोल इंडिया की सहायक कंपनी भारत कोकिंग कोल लिमिटेड ने पूंजी बाजार में कदम रखते हुए अपना बहुप्रतीक्षित प्रारंभिक सार्वजनिक निर्गम लॉन्च कर दिया है। कुल 1,071.11 करोड़ रुपये के इस आईपीओ के साथ बीसीसीएल ने निवेशकों के लिए कोयला क्षेत्र की एक अहम सार्वजनिक पेशकश खोल दी है। यह इश्यू शुक्रवार से सब्सक्रिप्शन के लिए उपलब्ध है और 13 जनवरी तक इसमें बोली लगाई जा सकेगी। इसके बाद 14 जनवरी को शेयरों का आवंटन किया जाएगा, 15 जनवरी को शेयर निवेशकों के डीमैट खातों में क्रेडिट होंगे और 16 जनवरी को इसके बीएसई और एनएसई पर लिस्ट होने की संभावना है।

इस आईपीओ के लिए कंपनी ने 21 से 23 रुपये प्रति शेयर का प्राइस बैंड तय किया है। एक लॉट में 600 शेयर रखे गए हैं, यानी रिटेल निवेशकों को न्यूनतम 12,600 रुपये के निवेश से शुरुआत करनी होगी, यदि वे निचले प्राइस बैंड पर आवेदन करते हैं। रिटेल निवेशकों को इस इश्यू में न्यूनतम एक लॉट और अधिकतम 14 लॉट तक बोली लगाने की अनुमति दी गई है। इस तरह अधिकतम रिटेल निवेश सीमा के भीतर रहते हुए निवेशक बड़ी हिस्सेदारी के लिए आवेदन कर सकते हैं।

आईपीओ के प्रति संस्थागत निवेशकों की रुचि का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि एंकर निवेशकों ने इश्यू खुलने से पहले ही 273.13 करोड़ रुपये का निवेश कर दिया। इनमें एलआईसी, निप्पन लाइफ इंडिया म्यूचुअल फंड और बंधन म्यूचुअल फंड जैसे बड़े और भरोसेमंद नाम शामिल हैं। यह निवेश बाजार में बीसीसीएल के प्रति विश्वास और दीर्घकालिक संभावनाओं का संकेत माना जा रहा है।

शेयरों के आवंटन की बात करें तो इस इश्यू का 42.50 प्रतिशत हिस्सा क्वालिफाइड इंस्टीट्यूशनल बायर्स के लिए आरक्षित किया गया है। इसके अलावा 29.75 प्रतिशत हिस्सा रिटेल निवेशकों, 12.75 प्रतिशत नॉन-इंस्टीट्यूशनल इनवेस्टर्स के लिए रखा गया है। कर्मचारियों के लिए 5 प्रतिशत और कंपनी के पुराने शेयरधारकों के लिए 10 प्रतिशत हिस्सा आरक्षित किया गया है। इस संरचना से यह साफ है कि कंपनी ने संस्थागत निवेशकों के साथ-साथ आम निवेशकों और कर्मचारियों को भी संतुलित अवसर देने की कोशिश की है।

बीसीसीएल की वित्तीय स्थिति पर नजर डालें तो पिछले कुछ वर्षों में इसमें उतार-चढ़ाव देखने को मिला है, हालांकि कुल मिलाकर कंपनी की आय और लाभ का स्तर मजबूत रहा है। वित्त वर्ष 2022-23 में कंपनी ने 664.78 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ दर्ज किया था। इसके बाद वित्त वर्ष 2023-24 में यह लाभ तेजी से बढ़कर 1,564.46 करोड़ रुपये तक पहुंच गया। हालांकि वित्त वर्ष 2024-25 में इसमें कुछ गिरावट आई और शुद्ध लाभ 1,240.19 करोड़ रुपये रहा। चालू वित्त वर्ष की पहली छमाही में कंपनी ने 123.88 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ अर्जित किया है।

राजस्व के मोर्चे पर भी बीसीसीएल का प्रदर्शन स्थिर और मजबूत रहा है। वित्त वर्ष 2022-23 में कंपनी का राजस्व 13,018.57 करोड़ रुपये था, जो अगले वर्ष बढ़कर 14,652.53 करोड़ रुपये पर पहुंच गया। वित्त वर्ष 2024-25 में राजस्व थोड़ा घटकर 14,401.63 करोड़ रुपये रहा। चालू वित्त वर्ष की पहली छमाही में कंपनी ने 6,311.51 करोड़ रुपये का राजस्व दर्ज किया है, जो सालाना आधार पर स्थिर मांग का संकेत देता है।

ईबीआईटीडीए के आंकड़ों में भी इसी तरह का उतार-चढ़ाव देखने को मिलता है। वित्त वर्ष 2022-23 में ईबीआईटीडीए 891.31 करोड़ रुपये था, जो वित्त वर्ष 2023-24 में बढ़कर 2,493.89 करोड़ रुपये तक पहुंच गया। इसके बाद वित्त वर्ष 2024-25 में यह थोड़ा घटकर 2,356.06 करोड़ रुपये रहा। चालू वित्त वर्ष की पहली छमाही में ईबीआईटीडीए 459.93 करोड़ रुपये दर्ज किया गया है, जो यह दर्शाता है कि परिचालन स्तर पर कंपनी अभी भी मुनाफे में है।

राजकोट में बार-बार कांपी धरती, 12 घंटे में आए 7 भूकंप के झटकों से दहशत

(जीएनएस)। राजकोट। गुजरात के राजकोट जिले में बीते 12 से 24 घंटों के भीतर भूकंप के लगातार सात झटके महसूस किए जाने से इलाके में दहशत का माहौल बन गया है। हालांकि सभी झटके हल्की तीव्रता के रहे और किसी तरह के जान-माल के नुकसान की कोई खबर सामने नहीं आई है, लेकिन बार-बार धरती हिलने से लोगों के मन में किसी बड़े भूकंप की आशंका घर कर गई है। एहतियात के तौर पर प्रशासन ने आसपास के कुछ स्कूलों में छुट्टी घोषित कर दी है और स्थिति पर लगातार नजर रखी जा रही है।

सेंटर फॉर सीस्मोलॉजी के अनुसार, इन सभी भूकंपों की तीव्रता रिक्टर पैमाने पर 2.7 से 3.8 मैग्नीट्यूड के बीच दर्ज की गई। अधिकारियों ने बताया कि इन झटकों का केंद्र उपलेटा से लगभग 28 किलोमीटर दूर क्षेत्र में रहा। भूकंप की तीव्रता भले ही कम रही हो, लेकिन झटकों की आवृत्ति अधिक होने के कारण लोग घरों से बाहर निकल आए और कई इलाकों में अफरा-तफरी का माहौल देखा गया।

अधिकारियों के मुताबिक, शुक्रवार सुबह ही छह बार भूकंप के झटके महसूस किए गए। पहला झटका सुबह 6 बजकर 19 मिनट पर आया, जिसकी तीव्रता 3.8 मैग्नीट्यूड दर्ज की गई। इसके बाद 6:55 बजे, 6:58 बजे, 7:10 बजे, 7:13 बजे और 7:33 बजे लगातार झटके महसूस हुए। इससे पहले गुरुवार रात 8 बजकर 43 मिनट पर भी एक हल्का झटका दर्ज किया गया था। लगातार हो रही इन घटनाओं ने आम लोगों की चिंता बढ़ा दी है।

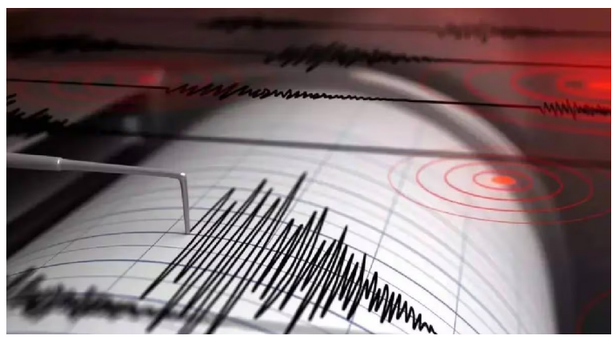

स्थानीय निवासियों का कहना है कि सुबह-सुबह आए झटकों के दौरान खिड़कियां और दरवाजे हिलने लगे, जिससे लोग घबरा गए। कई परिवार एहतियात के तौर पर कुछ समय के लिए खुले स्थानों पर निकल आए। हालांकि कुछ ही मिनटों में स्थिति सामान्य हो गई, लेकिन डर का असर लंबे समय तक लोगों के चेहरे पर साफ दिखाई दिया। बच्चों और बुजुर्गों में खासतौर पर चिंता देखी गई।

प्रशासन और आपदा प्रबंधन विभाग ने लोगों से अपील की है कि वे घबराएं नहीं और अफवाहों पर ध्यान न दें। विशेषज्ञों का कहना है कि इस तरह के हल्के और बार-बार आने वाले झटके कई बार भूगर्भीय तनाव के धीरे-धीरे निकलने का संकेत भी हो सकते हैं, लेकिन स्थिति पर सतर्क नजर रखना जरूरी है। भूकंप विज्ञानियों की टीमें क्षेत्र के आंकड़ों का विश्लेषण कर रही हैं, ताकि किसी संभावित खतरे का समय रहते आकलन किया जा सके।

राजकोट और आसपास का क्षेत्र पहले भी हल्के भूकंपों का अनुभव कर चुका है, लेकिन एक ही दिन में इतने अधिक झटकों ने लोगों की चिंता बढ़ा दी है। फिलहाल प्रशासन ने राहत की सांस लेते हुए कहा है कि किसी तरह के नुकसान की सूचना नहीं है, लेकिन एहतियात और सतर्कता ही सबसे बड़ा बचाव है।

बाजार से चार अरब डॉलर जुटाने की तैयारी में रिलायंस जियो, देश के सबसे बड़े आईपीओ की बनती तस्वीर

(जीएनएस)। मुंबई। मुकेश अंबानी के नेतृत्व वाली रिलायंस जियो प्लेटफॉर्म्स लिमिटेड वर्ष 2026 में शेयर बाजार में उतरने की दिशा में तेजी से कदम बढ़ा रही है। अंतरराष्ट्रीय समाचार एजेंसी रॉयटर्स की रिपोर्ट के अनुसार कंपनी अपने प्रस्तावित आरंभिक सार्वजनिक निर्गम यानी आईपीओ के तहत करीब 2.5 प्रतिशत हिस्सेदारी बाजार में उतारने पर विचार कर रही है। अनुमान लगाया जा रहा है कि इस सीमित हिस्सेदारी की बिक्री से ही रिलायंस जियो लगभग चार अरब डॉलर से अधिक की पूंजी जुटा सकती है। यदि यह योजना आकार लेती है, तो यह भारत के अब तक के सबसे बड़े पब्लिक इश्यू के रूप में दर्ज हो सकता है और भारतीय पूंजी बाजार के इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ सकता है।

रिलायंस जियो आज देश की सबसे बड़ी दूरसंचार कंपनी के रूप में स्थापित हो चुकी है। इसके ग्राहकों की संख्या 50 करोड़ से अधिक बताई जा रही है, जो इसे न केवल भारत बल्कि दुनिया की चुनिंदा बड़ी टेलीकॉम कंपनियों की कतार में खड़ा करती है। बाजार विशेषज्ञों का मानना है कि जियो का आईपीओ निवेशकों के बीच जबरदस्त उत्साह पैदा करेगा और यह वर्ष का सबसे बहुप्रतीक्षित इश्यू साबित हो सकता है। निवेश बैंक जेफरीज ने हाल ही में रिलायंस जियो प्लेटफॉर्म्स का मूल्यांकन करीब 180 अरब डॉलर आंका है। इस वैल्यूएशन के आधार पर देखा जाए, तो केवल 2.5 प्रतिशत हिस्सेदारी की बिक्री से भी कंपनी को भारी-भरकम पूंजी मिल सकती है।

हालांकि, रिलायंस इंडस्ट्रीज या जियो प्लेटफॉर्म्स की ओर से अब तक आईपीओ के सटीक आकार, समय-सीमा और अंतिम वैल्यूएशन को लेकर कोई आधिकारिक घोषणा नहीं की गई है। बावजूद इसके, बाजार में इसकी तैयारियों को लेकर चर्चाएं तेज हो गई हैं और निवेशक पहले से ही इस संभावित इश्यू पर नजरें गड़ाए बैठे हैं। जानकारों का कहना है कि जियो का आईपीओ न केवल कंपनी के लिए बल्कि भारतीय शेयर बाजार के लिए भी एक बड़ा घटनाक्रम होगा, क्योंकि इससे विदेशी और घरेलू निवेशकों की दिलचस्पी और बढ़ेगी।

पिछले कुछ वर्षों में रिलायंस जियो ने खुद को सिर्फ एक पारंपरिक टेलीकॉम कंपनी तक सीमित नहीं रखा है। कंपनी ने डिजिटल सेवाओं, क्लाउड कंप्यूटिंग, डेटा एनालिटिक्स और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसे उभरते क्षेत्रों में भी आक्रामक विस्तार किया है। इसी रणनीति के तहत जियो ने केकेआर, जनरल अटलांटिक, सिल्वर लेक और अबू धाबी इन्वेस्टमेंट अथॉरिटी जैसे वैश्विक निवेशकों से अरबों डॉलर का निवेश आकर्षित किया था। इन निवेशों ने न केवल कंपनी की वित्तीय स्थिति को मजबूत किया, बल्कि उसके वैश्विक कद को भी नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया।

रिपोर्ट में यह भी उल्लेख किया गया है कि जियो के विशाल आकार और संभावित उच्च वैल्यूएशन को देखते हुए कंपनी फिलहाल केवल सीमित हिस्सेदारी ही सार्वजनिक करने पर विचार कर रही है। बाजार विशेषज्ञों के अनुसार, कम हिस्सेदारी की लिस्टिंग से शेयरों की मांग बढ़ती है, जिससे कीमतों में प्रतिस्पर्धा पैदा होती है और बेहतर मूल्यांकन हासिल किया जा सकता है। यह रणनीति ऐसे समय में सामने आ रही है, जब सेबी बड़े आईपीओ के लिए न्यूनतम पब्लिक शेयरहोल्डिंग की सीमा में संभावित बदलाव पर भी विचार कर रहा है।

कुल मिलाकर, रिलायंस जियो प्लेटफॉर्म्स का प्रस्तावित आईपीओ न केवल कंपनी के विकास की अगली कड़ी माना जा रहा है, बल्कि यह भारतीय पूंजी बाजार की गहराई, क्षमता और वैश्विक आकर्षण को भी दर्शाता है। यदि यह इश्यू तय योजना के अनुसार आगे बढ़ता है, तो आने वाले समय में यह निवेशकों, उद्योग जगत और बाजार नियामकों के लिए एक ऐतिहासिक घटनाक्रम साबित हो सकता है।

कुत्तों को खाना खिलाने पर परेशान करने वालों पर केस दर्ज कराएं : सुप्रीम कोर्ट

(जीएनएस)। नई दिल्ली। आवारा और लावारिस कुत्तों को खाना खिलाने तथा उनकी देखभाल करने वाले लोगों, खासकर महिलाओं को परेशान किए जाने के मामलों पर सुप्रीम कोर्ट ने कड़ा रुख अपनाया है। शीर्ष अदालत ने साफ शब्दों में कहा है कि केवल कुत्तों को खाना खिलाने या उनकी देखरेख करने के कारण किसी व्यक्ति को डराना, धमकाना या उत्पीड़ित करना अपराध की श्रेणी में आता है। अदालत ने स्पष्ट किया कि ऐसे मामलों को केवल सामाजिक विवाद मानकर नजरअंदाज नहीं किया जा सकता और पीड़ित व्यक्ति सीधे पुलिस में प्राथमिकी दर्ज करा सकते हैं या आवश्यकता पड़ने पर हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटा सकते हैं।

शुक्रवार को इस मुद्दे से जुड़ी याचिकाओं पर सुनवाई के दौरान जस्टिस विक्रम नाथ, जस्टिस संदीप मेहता और जस्टिस एन. वी. अंजारिया की विशेष पीठ ने कहा कि यदि कोई सतर्कता समूह, स्थानीय निवासी या कोई अन्य व्यक्ति कानून अपने हाथ में लेकर कुत्तों को खाना खिलाने वालों को परेशान करता है, तो यह स्पष्ट रूप से कानून-व्यवस्था का मामला है। अदालत ने कहा कि इस तरह की हरकतों को बर्दाश्त नहीं किया जा सकता, क्योंकि यह न केवल व्यक्तिगत स्वतंत्रता का उल्लंघन है, बल्कि सामाजिक सौहार्द को भी नुकसान पहुंचाता है।

पीठ ने यह भी कहा कि देश में पशु कल्याण से जुड़े कानून और नियम पहले से मौजूद हैं और उनके तहत जानवरों के प्रति क्रूरता या उनके कल्याण में बाधा डालना गलत है। अगर कोई व्यक्ति या समूह यह मानता है कि कुत्तों को खाना खिलाने से सार्वजनिक व्यवस्था प्रभावित हो रही है, तो उसका समाधान कानून के दायरे में रहकर निकाला जाना चाहिए, न कि किसी को डराने या उत्पीड़ित करने के जरिए। अदालत ने साफ किया कि महज इस आधार पर कि कोई व्यक्ति कुत्तों को खाना खिला रहा है, उसे परेशान करना अपराध है और इसके खिलाफ सख्त कार्रवाई हो सकती है।

सुप्रीम कोर्ट ने यह भी रेखांकित किया कि ऐसे मामलों में पीड़ितों को चुप रहने की जरूरत नहीं है। यदि उन्हें धमकाया जा रहा है या मानसिक उत्पीड़न का सामना करना पड़ रहा है, तो वे सीधे पुलिस से संपर्क कर एफआईआर दर्ज करा सकते हैं। इसके अलावा, अगर स्थानीय स्तर पर उन्हें न्याय नहीं मिलता है, तो वे संबंधित हाईकोर्ट में भी राहत के लिए याचिका दाखिल कर सकते हैं। अदालत ने यह संदेश दिया कि कानून नागरिकों की सुरक्षा के लिए है और किसी को भी अपनी पसंद या मानवीय व्यवहार के कारण प्रताड़ित नहीं किया जा सकता।

यह टिप्पणी ऐसे समय आई है, जब देश के कई हिस्सों में आवारा कुत्तों को लेकर विवाद बढ़ते जा रहे हैं। कहीं कुत्तों के हमले को लेकर नाराजगी है, तो कहीं उन्हें खाना खिलाने वालों और विरोध करने वालों के बीच टकराव की स्थिति बन रही है।

कोटा में दर्दनाक हादसा: खौलते पानी से झुलसने पर 3 साल की मासूम की मौत, बाथरूम में अकेली होने से हुआ हादसा

(जीएनएस)। कोटा। कोटा जिले के रामगंजमंडी क्षेत्र से एक दिल दहला देने वाली घटना सामने आई है, जहां करीब साढ़े तीन साल की मासूम बच्ची ने अनजाने में खुद पर खौलता हुआ पानी डाल लिया। गंभीर रूप से झुलसी बच्ची ने इलाज के दौरान दम तोड़ दिया। यह हादसा न सिर्फ परिवार के लिए, बल्कि पूरे इलाके के लिए गहरे शोक और सदमे का कारण बन गया है। मृतक बच्ची रुमायशा के पिता अमजद खान ने बताया कि वे अपने परिवार के साथ वार्ड नंबर 24, गोवर्धनपुरम, माताजी रोड पर रहते हैं। गुरुवार सुबह करीब 9 बजे उनकी पत्नी रुमायशा को नहलाने की तैयारी कर रही थीं। इसी दौरान बाथरूम में गीजर से गर्म पानी बाल्टी में भरकर रखा गया था। इसी बीच खेलते-खेलते मासूम रुमायशा अचानक बाथरूम में चली गई और वहां रखी बाल्टी से जग के जरिए खौलता पानी अपने ऊपर डाल लिया।

पानी गिरते ही बच्ची की चीखें गूंज उठीं। आवाज सुनकर माता-पिता तुरंत बाथरूम की ओर दौड़े, लेकिन तब तक मासूम का शरीर बुरी तरह झुलस चुका था। घबराए परिजन बिना समय गंवाए उसे

तुरंत रामगंजमंडी के सरकारी अस्पताल लेकर पहुंचे, जहां प्राथमिक उपचार किया गया। हालत बेहद नाजुक होने के कारण डॉक्टरों ने बच्ची को रात में कोटा के एमबीएस अस्पताल रेफर कर दिया।

एमबीएस अस्पताल के बर्न वार्ड में रुमायशा का इलाज लगातार चल रहा था। डॉक्टरों की टीम ने उसे बचाने की हरसंभव कोशिश की, लेकिन शुक्रवार सुबह करीब 5 बजे अचानक उसकी तबीयत बिगड़ गई और उसने दम तोड़ दिया। मासूम की मौत से परिवार पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा। घर में मातम छा गया और हर आंख नम हो गई।

पिता अमजद खान ने बताया कि उन्होंने बच्ची का पोस्टमॉर्टम नहीं करवाने और किसी भी तरह की कानूनी कार्रवाई नहीं करने का फैसला किया है। इस संबंध में रामगंजमंडी पुलिस थाने में एएसआई को लिखित आवेदन भी सौंप दिया गया है। पुलिस ने इसे पारिवारिक दुर्घटना मानते हुए आगे की कार्रवाई आवेदन के आधार पर रोक दी है।

अमजद खान कूरियर कंपनी में डिलीवरी बॉय के रूप में काम करते हैं। रुमायशा उनकी जुड़वां बेटियों में से एक थी। मासूम की असमय मौत ने न सिर्फ माता-पिता से उनकी लाड़ली छीन ली, बल्कि उसकी जुड़वां बहन के भविष्य में भी एक ऐसा खालीपन छोड़ दिया है, जिसे भर पाना शायद कभी संभव नहीं होगा।

यह हादसा एक बार फिर घरों में छोटे बच्चों की सुरक्षा को लेकर गंभीर सवाल खड़े करता है। खासकर बाथरूम और गर्म पानी से जुड़े उपकरणों को लेकर थोड़ी सी लापरवाही भी कितनी बड़ी त्रासदी में बदल सकती है, यह घटना उसका दर्दनाक उदाहरण है।

उत्तरकाशी में वनाग्नि का कहर, जल रहे घाटी के जंगल, पर्यावरण और जलस्रोतों पर मंडराया संकट

(जीएनएस)। उत्तरकाशी। लंबे समय से वर्षा और बर्फबारी न होने के कारण उत्तरकाशी जिले की गंगा–यमुना घाटी के जंगलों में भीषण वनाग्नि फैल गई है। बीते दो दिनों से यमुना वन प्रभाग और टौंस वन प्रभाग के अंतर्गत आने वाले कई वन क्षेत्रों में आग लगातार धधक रही है। पहाड़ों पर उठता धुएं का गुबार दूर-दूर तक देखा जा सकता है। इस आग ने न केवल बहुमूल्य वन संपदा को भारी नुकसान पहुंचाया है, बल्कि वन्य जीवों के अस्तित्व, ग्रामीणों की आजीविका और आने वाले समय में जल संकट को लेकर भी गंभीर चिंताएं खड़ी कर दी हैं।

जानकारी के अनुसार कंसेरु, हुडोली, मोल्डा, मोरी, मियागाड़, खरसाड़ी के साथ-साथ डंडा, टकनौर और मुखेम रेंज के जंगल आग की चपेट में हैं। कई स्थानों पर आग पहाड़ी ढलानों से ऊपर की ओर तेजी से फैल रही है, जिससे उसे नियंत्रित करना चुनौतीपूर्ण होता जा रहा है। स्थानीय ग्रामीणों का कहना है कि दिन के समय आग की लपटें और रात में जलते जंगल भयावह दृश्य प्रस्तुत कर रहे हैं। सूखे पत्तों और चीड़ की सुइयों के कारण आग तेजी से फैल रही है और देखते ही देखते बड़े क्षेत्र को अपनी चपेट में ले ले रही है।

जंगलों के बीच से गुजरने वाली कई पेयजल योजनाओं और प्राकृतिक जलस्रोतों पर भी इस आग का सीधा असर पड़ने लगा है। चौड़ी पत्ती वाले पेड़, जो पानी को संचित रखने और मिट्टी में नमी बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, बड़ी संख्या में जल रहे हैं। इससे आने वाले महीनों में गांवों के लिए पेयजल संकट गहराने की आशंका जताई जा रही है। ग्रामीणों का कहना है कि यदि आग पर जल्द काबू नहीं पाया गया, तो गर्मियों में पानी की समस्या विकराल रूप ले सकती है।

वन विभाग के अधिकारियों के अनुसार जिले में लंबे समय से बारिश और हिमपात न होने के कारण जंगलों में अत्यधिक सूखापन बना हुआ है। जमीन पर जमी सूखी पत्तियां, घास और चीड़ की सुइयां आग को तेजी से फैलने का माध्यम बन रही हैं। इसके साथ ही पहाड़ी इलाकों में चल रही तेज हवाएं भी आग बुझाने के प्रयासों में बाधा उत्पन्न कर रही हैं। कुछ स्थानों पर मानवीय लापरवाही की आशंका से भी इनकार नहीं किया जा रहा है, क्योंकि अक्सर जलती बीड़ी-सिगरेट या खेतों में आग लगाने की घटनाएं जंगलों तक पहुंच जाती हैं।

आग की सूचना मिलते ही ग्रामीणों ने वन विभाग को अवगत कराया और त्वरित कार्रवाई की मांग की। प्रभागीय वनाधिकारी डी.पी. बलूनी ने बताया कि संबंधित क्षेत्रों में वन कर्मियों को भेज दिया गया है और आग पर नियंत्रण पाने के लिए प्रयास तेज कर दिए गए हैं। दुर्गम इलाकों में आग तक पहुंचना कठिन होने के कारण कर्मचारियों को भारी मशक्कत करनी पड़ रही है। कई जगहों पर ग्रामीण भी अपने स्तर पर आग बुझाने में सहयोग कर रहे हैं।

वन्य जीवों के लिए यह स्थिति और भी खतरनाक साबित हो रही है। जंगलों में आग लगने से उनका प्राकृतिक आवास नष्ट हो रहा है, जिससे वे सुरक्षित स्थानों की तलाश में आबादी वाले क्षेत्रों की ओर रुख कर सकते हैं। इससे मानव–वन्य जीव संघर्ष की घटनाएं बढ़ने की आशंका जताई जा रही है। विशेषज्ञों का मानना है कि यदि वनाग्नि पर समय रहते नियंत्रण नहीं पाया गया, तो इसका असर केवल स्थानीय नहीं बल्कि पूरे क्षेत्र के पर्यावरण संतुलन पर पड़ेगा।

उत्तरकाशी में लगी यह वनाग्नि एक बार फिर जलवायु परिवर्तन, मौसम में असामान्य बदलाव और जंगलों की सुरक्षा को लेकर गंभीर सवाल खड़े कर रही है। जरूरत इस बात की है कि आग पर शीघ्र नियंत्रण के साथ-साथ भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए ठोस रणनीति बनाई जाए, ताकि हिमालयी क्षेत्र की अमूल्य वन संपदा, जलस्रोत और जैव विविधता को सुरक्षित रखा जा सके।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने गांधीनगर में राष्ट्रीय खनिज चिंतन शिविर का उद्घाटन किया

▸▸प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में यह चिंतन शिविर नए भारत के निर्माण में माइनिंग सेक्टर का रोडमैप तैयार करने का सक्षम मंच बनेगा : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

▸▸भारत का खनन क्षेत्र 2047 तक 'विकसित भारत' के लक्ष्य को प्राप्त करने का मजबूत आधार स्तंभ बनेगा : केंद्रीय कोयला एवं खान मंत्री श्री जी. किशन रेड्डी

▸▸खनिज संपदा हमारी अर्थव्यवस्था की रीढ़ है : केंद्रीय जल शक्ति मंत्री श्री सी.आर. पाटिल

▸▸बिहार के उप मुख्यमंत्री और विभिन्न राज्यों के खान मंत्री हुए सहभागी

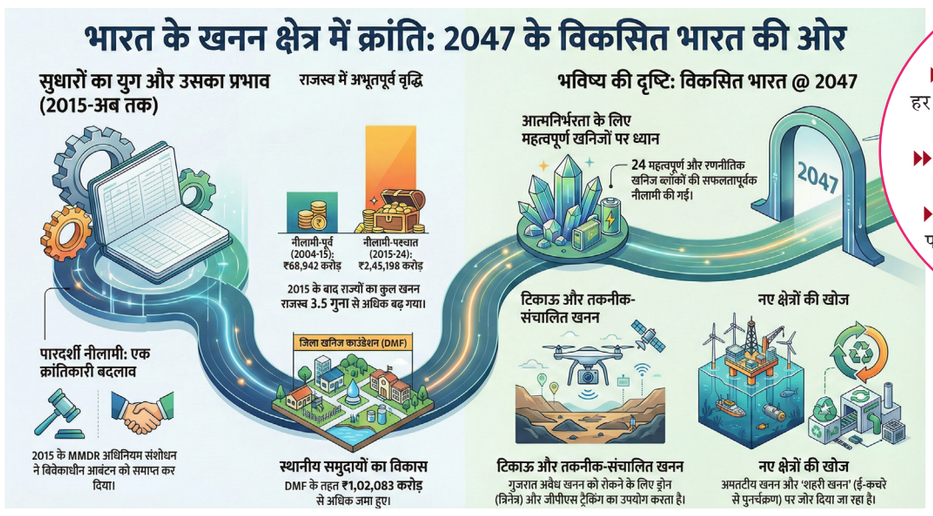

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल :-

▸▸प्रधानमंत्री देश को आत्मनिर्भर बनाने के लिए हर सेक्टर में होलिस्टिक एप्रोच के साथ रिफॉर्म्स लाए हैं

▸▸गुजरात लिग्नाइट, लाइमस्टोन और बॉक्साइट जैसे मुख्य खनिजों के लिए एक अहम क्षेत्र

▸▸गुजरात अपनी खनिज संपदाओं के द्वारा वोकल फॉर लोकल और आत्मनिर्भर भारत से 'विकसित भारत@2047' का संकल्प साकार करने में योगदान देने को प्रतिबद्ध

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने केंद्रीय खान मंत्रालय द्वारा गुरुवार को महात्मा मंदिर में आयोजित राष्ट्रीय खनिज चिंतन शिविर में कहा कि यह चिंतन शिविर नए भारत के निर्माण का रोडमैप तैयार करने का एक सक्षम मंच बनेगा।

केंद्रीय खान मंत्रालय की ओर से गांधीनगर स्थित महात्मा मंदिर में प्रथम तीन दिवसीय राष्ट्रीय चिंतन शिविर का आयोजन किया गया है, इसमें देश के विभिन्न राज्यों के खान मंत्री और पदाधिकारियों सहित हितधारक भाग ले रहे हैं।

मुख्यमंत्री ने केंद्रीय मंत्रियों सर्वश्री जी. किशन रेड्डी, सी.आर. पाटिल, बिहार के उप मुख्यमंत्री एवं केंद्रीय खान राज्य मंत्री सहित गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में इस तीन दिवसीय चिंतन शिविर का उद्घाटन किया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि खान-खनिज देश के उद्योगों एवं अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण आधार स्तंभ है। यह चिंतन शिविर सामूहिक चिंतन-मंथन के माध्यम से इस आधार स्तंभ को और मजबूत बनाकर देश के विकास को एक नई गति देने का प्लेटफार्म प्रदान करेगा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री देश को आत्मनिर्भर बनाने के लिए हर सेक्टर में होलिस्टिक एप्रोच के साथ रिफॉर्म्स (सुधार) लाए हैं। खनन क्षेत्र भी ऐसे रिफॉर्म्स का साक्षी रहा है। स्पष्ट नीतियों, राजनीतिक इच्छा शक्ति और पारदर्शी शासन के परिणामस्वरूप ये रिफॉर्म्स संभव हो पाए हैं।

श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि प्रधानमंत्री ने प्रकृति के साथ संतुलन बनाकर विकास करने की जो परंपरा स्थापित की है, और ग्रीन माइनिंग, साइंटिफिक रेक्लेमेशन और टेक्नोलॉजी आधारित निगरानी से खनन क्षेत्र का विकास किया है।

मुख्यमंत्री ने गुजरात को लिग्नाइट, लाइमस्टोन और बॉक्साइट जैसे मुख्य खनिजों के लिए एक अहम स्थान बताते हुए कहा कि खान-खनिज क्षेत्र को केवल उत्पादकता और नीलामी तक सीमित न रखते हुए गुजरात ने इसे पारदर्शिता, अनुशासन और नियम-कानूनों के अमल का प्रतीक भी बनाया है।

उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने खान से लेकर अंतिम गंतव्य स्थल तक के खनिज परिवहन की रीयल टाइम निगरानी के लिए जीपीएस व्हीकल ट्रैकिंग और मॉनिटरिंग सिस्टम विकसित किया है। उन्होंने विश्वास जताया कि गुजरात अपनी खनिज संपदाओं के माध्यम से प्रधानमंत्री के 'वोकल फॉर लोकल' और 'आत्मनिर्भर भारत' से 'विकसित भारत@2047' के संकल्प को साकार करने को प्रतिबद्ध है।

केंद्रीय कोयला एवं खान मंत्री श्री जी. किशन रेड्डी ने खनन क्षेत्र को भारत के आर्थिक विकास और 2047 तक 'विकसित भारत' के लक्ष्य को प्राप्त करने का एक मजबूत आधार स्तंभ करार दिया। उन्होंने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में गुजरात के विकास मॉडल की प्रशंसा करते हुए कहा कि गुजरात आज पूरे देश के लिए विकास का केंद्र बन गया है। गुजरात के मॉडल का अनुसरण करके आज देश के अनेक राज्यों के बीच विकास और निवेश के लिए स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की शुरुआत हुई है।

केंद्रीय मंत्री ने पिछले 11 वर्षों में खनन क्षेत्र में आए बदलावों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि 2014 की तुलना में मिनरल एक्सप्लोरेशन यानी खनिज अन्वेषण में 190 फीसदी की वृद्धि हुई है। आयरन, लाइमस्टोन, लेड और जिंक जैसे खनिजों के उत्पादन में डबल डिजिट ग्रोथ देखने को मिली है। पारदर्शी नीलामी प्रणाली और डिस्ट्रिक्ट मिनरल फाउंडेशन (डीएमडब्ल्यू) के माध्यम से राज्यों के खनन राजस्व में बड़ा उछाल आया है। केंद्रीय मंत्री ने आगे कहा कि विकसित भारत के लक्ष्य को हासिल करने के लिए भारत सरकार ने लिथियम, कोबाल्ट और टंगस्टन जैसे क्रिटिकल मिनरल्स पर विशेष जोर दिया है।

उन्होंने कहा कि भारत अब केवल खनिजों के निष्कर्षण (पृथ्वी से खनिज निकालने की प्रक्रिया) तक ही सीमित नहीं है, बल्कि रिफाइनिंग, रीसाइक्लिंग और रीप्रोसेसिंग की पूरी 'वैल्यू चेन' पर ध्यान दे रहा है। वर्ष 2030 तक ई-वेस्ट से क्रिटिकल मिनरल्स को रिकवर करने के लिए विशेष योजनाएं लागू की गई हैं।

उन्होंने कहा कि इस चिंतन शिविर का मुख्य उद्देश्य अगले पांच वर्षों के लिए रणनीतिक योजना तैयार करना है। इसमें खनिज ब्लॉकों की नीलामी से लेकर ऑपरेशन तक के समय को न्यूनतम करना, नेक्स्ट जनरेशन टेक्नोलॉजी और डिजिटलीकरण का उपयोग बढ़ाना, अनुसंधान एवं विकास और कौशल विकास पर ध्यान केंद्रित करके भारत को ग्लोबल प्रोसेसिंग हब बनाना जैसे विषयों पर अधिकतम फोकस करना शामिल है। इसके अलावा उन्होंने पर्यावरण संरक्षण और संसाधनों के पुनर्उपयोग के लिए 'अर्बन माइनिंग' और 'वेस्ट टू वेल्थ' के विचार को गति देने का आह्वान किया।

केंद्रीय जल शक्ति मंत्री श्री सी.आर. पाटिल ने कहा कि 'विकसित भारत@2047' के लक्ष्य को प्राप्त करने में खनिज क्षेत्र और जल प्रबंधन का परस्पर समन्वय बहुत ही आवश्यक है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत जब 'विकसित भारत' बनने की दिशा में कदम बढ़ा रहा है, ऐसे में खनिज संपदा को हमारी अर्थव्यवस्था की रीढ़ कहना गलत नहीं होगा। टेक्नोलॉजी और इंफ्रास्ट्रक्चर के विकास के लिए आवश्यक कच्चे माल की पूर्ति में इस मंत्रालय की भूमिका निर्णायक है।

उन्होंने जोर देकर कहा कि खनिज उत्खनन के दौरान पर्यावरण और जल संसाधनों का संरक्षण भी उतना ही जरूरी है। उन्होंने 'माइनिंग विद माइंडफुलनेस' का मंत्र देते हुए कहा कि पर्यावरण संतुलन के साथ खनन कार्य करने से ही दीर्घकालिक लाभ होगा। खनन प्रक्रिया में पानी का रीसाइकल और रीयूज अनिवार्य है। उन्होंने आधुनिक टेक्नोलॉजी का इस प्रकार से उपयोग करने की बात कही जिससे भूमिगत जलस्तर को नुकसान न पहुंचे।

श्री पाटिल ने कहा कि भारत को खनिज क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाकर हम आयात पर निर्भरता को कम कर सकते हैं, जो देश की बहुमूल्य विदेशी मुद्रा बचाएगी और स्थानीय रोजगार के अवसर पैदा करेगी। शिविर के दौरान उन्होंने खान विभाग द्वारा अपनाई गई पारदर्शिता और कार्य क्षमता में वृद्धि करने वाली डिजिटल और नवीन पद्धतियों की प्रशंसा की।

केंद्रीय कोयला एवं खान राज्य मंत्री श्री सतीश चंद्र दुबे ने चिंतन शिविर को भारत के खनन क्षेत्र के भविष्य के लिए एक निर्णायक मार्ग बताते हुए कहा कि विकसित भारत के लक्ष्य के लिए वर्ष 2026 अत्यंत महत्वपूर्ण है। ऊर्जा संग्रह के लिए आवश्यक बैटरी निर्माण में इस्तेमाल होने वाले 'क्रिटिकल मिनरल्स' के क्षेत्र में भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए सरकार ऐसी खानों की नीलामी और उत्पादन प्रक्रिया को तेज बना रही है। आज के टेक्नोलॉजी के युग में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और आधुनिक उपकरणों का खनन क्षेत्र में उपयोग अनिवार्य है, जिससे न केवल प्रक्रिया में तेजी आएगी, बल्कि प्रदूषण, लागत और समय में भी उल्लेखनीय बचत होगी।

खनिज विकास के साथ पर्यावरण संरक्षण पर बल देते हुए श्री दुबे ने कहा कि खनन से होने वाले नुकसान की भरपाई के लिए वैकल्पिक स्रोतों की तलाश करना और पर्यावरण का संतुलन बनाए रखना सभी की नैतिक जिम्मेदारी है। उन्होंने साफ किया कि इस क्षेत्र में केवल सरकार की भागीदारी ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि निजी क्षेत्र को भी सरकार के साथ कदम मिलाकर चलना होगा।

चिंतन शिविर के उद्घाटन अवसर पर केंद्रीय खनन सचिव श्री पीयूष गोयल ने स्वागत भाषण दिया।

कार्यक्रम में आंध्र प्रदेश के मंत्री श्री कोल्लू रवीन्द्र, ओडिशा के मंत्री श्री विभूति भूषण जेना, तेलंगाना के मंत्री श्री विवेक वेंकट स्वामी, उत्तर प्रदेश के मंत्री डॉ. अरुण कुमार, नागालैंड के मंत्री श्री चीनवेंग, गुजरात की उद्योग एवं खान विभाग की अपर मुख्य सचिव सुश्री ममता वर्मा सहित केंद्रीय कोयला और खान मंत्रालय एवं राज्य सरकार के उच्च अधिकारी मौजूद रहे।

सोमनाथ स्वाभिमान पर्व में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के आगमन से पूर्व अनूठा उत्साह : गिरनार तीर्थक्षेत्र सहित साधु-संत भगवान सोमनाथ के दर्शनार्थ पहुँचे

▸▸साधु-संतों की सोमनाथ के शंख चौक से मंदिर तक की पदयात्रा में शिवजी के प्रिय वाद्य डमरू के नाद की गूंज, राज्य के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री डॉ. प्रद्युमन वाजा साधु-संतों की पदयात्रा में सहभागी हुए

▸▸साधु-संतों सहित महानुभावों ने भगवान सोमनाथ के आस्थापूर्वक दर्शन किए, पदयात्रा तथा सोमनाथ मंदिर में हर हर महादेव के जयघोष से वातावरण भक्तिमय बना

▸▸साधु-संतों की पदयात्रा में परंपरागत वाद्य के साथ सिद्धिविनायक ढोल ग्रुप तथा शिवभक्तिमय संगीत से सोमनाथ में भव्य तथा दिव्य वातावरण सृजित हुआ

(जीएनएस)। गांधीनगर : सोमनाथ स्वाभिमान पर्व में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के आगमन से पूर्व भव्य एवं दिव्य वातावरण का सृजन हुआ है। शुक्रवार को गिरनार तीर्थक्षेत्र सहित साधु-संत सोमनाथ के शंख चौक से पदयात्रा कर देवाधिदेव भगवान महादेव के दर्शनार्थ पहुँचे। आध्यात्मिक चेतना को उजागर करने वाली इस पदयात्रा में राज्य के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री डॉ. प्रद्युमन वाजा, सांसद श्री राजेशभाई चुडासमा आदि महानुभाव सहभागी हुए।

इस पदयात्रा में गिरनार तीर्थक्षेत्र के श्री इंद्रभारती बापू, श्री महेंद्रनंदगिरी बापू, श्री हरिहरानंद बापू सहित साधु-संत जुड़े। इस दौरान बड़ी संख्या में साधु-संतों ने भगवान शिवजी के प्रिय वाद्य डमरू के नाद की गूंज से आध्यात्मिक ऊर्जा का प्रसार किया। इसके अलावा; लगभग 75 ढोलवादकों वाले सिद्धिविनायक ढोल ग्रुप ने तालबद्ध प्रस्तुति से अनूठा माहौल बनाया।

इस पदयात्रा में विधायक सर्वश्री भगवानभाई बारड, अनिरुद्धभाई दवे, पूर्व सांसद सर्वश्री दीनूभाई सोलंकी, मोहनभाई कुंडारिया, अग्रणी सर्वश्री धवलभाई दवे, पुनीतभाई शर्मा, झवेरीभाई ठकरार आदि महानुभाव सहभागी हुए और उन्होंने भगवान सोमनाथ के भावपूर्ण दर्शन कर धन्यता की अनुभूति की।

इस पदयात्रा के दौरान पुष्पवर्षा के साथ साधु-संतों तथा महानुभावों का अभिवादन किया गया।

इस पदयात्रा से समग्र सोमनाथ मंदिर परिसर में भव्य एवं दिव्य वातावरण का सृजन हुआ। इसके अलावा; उपस्थित श्रद्धालुओं ने भी साधु-संतों के दर्शन कर धन्यता की अनुभूति की।

बैंक और नियामक टकराव नहीं, साझेदारी का रिश्ता है, आरबीआई गवर्नर संजय मल्होत्रा का दो टूक संदेश

(जीएनएस)। मुंबई। भारतीय बैंकिंग और वित्तीय प्रणाली को लेकर रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया के गवर्नर संजय मल्होत्रा ने शुक्रवार को एक स्पष्ट और दूरगामी संदेश दिया। उन्होंने कहा कि बैंक और नियामक को एक-दूसरे के विरोधी के रूप में नहीं, बल्कि एक ही टीम के खिलाड़ी के तौर पर देखा जाना चाहिए। मुंबई में आयोजित 'कॉलेज ऑफ सुपरवाइजर्स' के तीसरे वार्षिक वैश्विक सम्मेलन में अपने संबोधन के दौरान गवर्नर ने साफ किया कि आरबीआई की भूमिका किसी "गलतियां पकड़ने वाले इंस्पेक्टर" की नहीं, बल्कि बैंकिंग संस्थाओं के भागीदार की है। उनका कहना था कि जब बैंक और अन्य वित्तीय संस्थाएं केंद्रीय बैंक को सहयोगी मानकर काम करेंगी, तभी पर्यवेक्षण की प्रक्रिया वास्तव में प्रभावी और सार्थक हो सकेगी।

गवर्नर संजय मल्होत्रा ने कहा कि भारत जैसे विशाल और विविधता वाले देश में वित्तीय स्थिरता, समावेशन और विकास सुनिश्चित करने के लिए यह जरूरी है कि नियामक और बैंक एक-दूसरे के साथ भरोसे और सहयोग के रिश्ते में काम करें। उन्होंने इस धारणा को खारिज किया कि आरबीआई केवल नियम थोपने या सजा देने वाला संस्थान है। उनके अनुसार, केंद्रीय बैंक का उद्देश्य व्यवस्था को दंडित करना नहीं, बल्कि उसमें सुधार लाना और उसे भविष्य के जोखिमों के लिए तैयार करना है। उन्होंने कहा कि आरबीआई द्वारा की जाने वाली प्रवर्तन या अनुशासनात्मक कार्रवाइयों को दंडात्मक नजरिए से नहीं देखा जाना चाहिए, बल्कि इन्हें सुधार और दिशा-निर्देशन का माध्यम समझा जाना चाहिए। अपने संबोधन में मल्होत्रा ने यह भी स्पष्ट किया कि नियामक कार्रवाई के पीछे दो प्रमुख उद्देश्य होते हैं। पहला, जिन संस्थानों में कमियां या अनियमितताएं पाई जाती हैं, उन्हें यह संकेत देना कि सुधार की आवश्यकता है। दूसरा, पूरे वित्तीय तंत्र को यह संदेश देना कि नियामकीय अपेक्षाएं क्या हैं और उनका पालन क्यों जरूरी है। उन्होंने कहा कि पर्यवेक्षण का कार्य केवल नियमों की सूची थमाना नहीं है, बल्कि यह कमियों की पहचान कर नीति और संचालन में सुधार लाने की प्रक्रिया है, जिससे पूरी प्रणाली मजबूत होती है।

गवर्नर ने यह भी कहा कि बैंक और नियामक का साझा लक्ष्य वित्तीय प्रणाली का विकास, उसकी स्थिरता और उसकी विश्वसनीयता को बनाए रखना है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि बैंकों को नियामक को बाधा नहीं, बल्कि मार्गदर्शक के रूप में देखना चाहिए। उनके अनुसार, यदि दोनों पक्ष एक-दूसरे के दृष्टिकोण को समझकर काम करें, तो बैंकिंग व्यवस्था ज्यादा सशक्त, पारदर्शी और भरोसेमंद बन सकती है।

VGRC राजकोट में RBSM के दौरान 1,500 से अधिक MoUs, 110 अंतरराष्ट्रीय खरीदार और 1,800 से अधिक B2B बैठकों के साथ होगा भव्य आयोजन

VGRE राजकोट में आयोजित RBSM कच्छ और सौराष्ट्र की निर्यात क्षमता को नई ऊँचाइयों तक ले जाएगा

(जीएनएस)। गांधीनगर : वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस के तहत राजकोट में होने वाली आगामी प्रदर्शनी एक महत्वपूर्ण आयोजन बनने जा रही है, जिसमें 1,500 से अधिक समझौता ज्ञापन (MoUs) होने की उम्मीद है। इस प्रदर्शनी में 110 अंतरराष्ट्रीय खरीदार भाग लेंगे, और रिवर्स बायर सेलर मीट (RBSM) के दौरान 1,800 से अधिक व्यावसायिक बैठकें निर्धारित की गई हैं। कच्छ और सौराष्ट्र क्षेत्र के लिए यह प्रदर्शनी 11 से 15 जनवरी 2026 को आयोजित की जाएगी।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी इस प्रदर्शनी का उद्घाटन करेंगे, जिसके बाद सम्मेलन का उद्घाटन सत्र आयोजित होगा, जिससे वैश्विक व्यापार नेताओं के राजकोट में एकत्र होने की पृष्ठभूमि तैयार होगी।

26,000 वर्ग मीटर में फैली यह प्रदर्शनी 400 से अधिक प्रदर्शकों के लिए नए अवसर देगी, जो विभिन्न क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करेंगे। इनमें एग्रो और फूड प्रोसेसिंग, मत्स्य पालन, रक्षा, ऊर्जा, पेट्रो-केमिकल्स, इंजीनियरिंग, तथा बंदरगाह और लॉजिस्टिक्स शामिल हैं। साथ ही टोरेंट पावर लिमिटेड, कोसोल, अडानी ग्रीन, एस्सार ग्रुप, नायरा एनर्जी, ज्योति सीएनसी और कई अन्य प्रमुख कॉरपोरेट्स की भी भागीदारी होगी।

रिवर्स बायर्स-सेलर्स मीट (RBSM) स्थानीय एमएसएमई, हथकरघा और हस्तशिल्प उद्यमों को अंतरराष्ट्रीय बाजारों से जोड़कर उन्हें प्रोत्साहित करेगा। इस सम्मेलन के लिए 1,800 से अधिक बी2बी बैठकों की योजना बनाई गई है, जिनके दौरान 1,500 से अधिक MoUs होने की उम्मीद है। इन बैठकों में 16 से अधिक देशों का प्रतिनिधित्व करने वाले 110 अंतरराष्ट्रीय खरीदार भाग लेंगे, जिनमें अमेरिका, यूरोप और ऑस्ट्रेलिया शामिल हैं, और ये इंजीनियरिंग, कृषि और वस्त्र जैसे विविध क्षेत्रों से होंगे। इसके अतिरिक्त, 20 राष्ट्रीय खरीदार भी इन बैठकों का हिस्सा होंगे, जिससे सहयोग और विकास के अवसर और मजबूत होंगे।

इस प्रदर्शनी को छह थीम आधारित डोम में आयोजित किया जाएगा, जिनमें से प्रत्येक उभरते अवसरों और सतत नवाचारों को उजागर करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। इनमें गेटवे टू ग्लोबल ग्रोथ, ग्रीन एनर्जी इकोसिस्टम एंड पेट्रोकेमिकल्स, क्राफ्ट्स विलेज एंड एमएसएमई पैविलियन, ओशन ऑफ अपॉर्च्युनिटीज, एंटरप्राइज एक्सीलेंस पैविलियन और पब्लिक सेक्टर पावरहाउस शामिल हैं। प्रत्येक डोम में एक समर्पित डिस्प्ले पॉप-अप स्टेज भी होगा, जो प्रदर्शकों को नए उत्पाद लॉन्च करने, अपने नवाचारों को प्रदर्शित करने और आगंतुकों के साथ सक्रिय रूप से जुड़ने के विशेष अवसर प्रदान करेगा।

यह आयोजन नवप्रवर्तकों, उद्यमियों, निवेशकों, एमएसएमई, स्टार्टअप्स, विदेशी खरीदारों, कॉरपोरेट्स, सरकारी विभागों, पीएसयू और वैश्विक साझेदारों को एक साथ एक मंच पर लाएगा, जिससे आत्मनिर्भर भारत, वोकल फॉर लोकल और सतत आर्थिक विकास के दृष्टिकोण को आगे बढ़ाया जा सके।

उद्यमियों, मेंटर्स और संस्थानों के बीच नेटवर्किंग को बढ़ावा देने के लिए एक उद्यमी मेला भी आयोजित किया जाएगा। यह सरकारी योजनाओं और नीतियों के प्रति जागरूकता बढ़ाएगा तथा नवाचार, उद्यम विकास और गुजरात के सशक्त स्टार्टअप इकोसिस्टम में भागीदारी को प्रोत्साहित करेगा।

यह आयोजन भारत की विकास यात्रा में गुजरात की केंद्रीय भूमिका को और अधिक सशक्त रूप से रेखांकित करेगा तथा क्षेत्रीय सशक्तिकरण, वैश्विक सहयोग और सतत विकास को नई गति प्रदान करेगा।

साथ ही, यह "विकसित गुजरात" से "विकसित भारत" के विज़न को साकार करने की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण और निर्णायक कदम सिद्ध होगा।

भारतीय संस्कृति के रक्षकों तथा आस्था के केन्द्रों की महत्ता नई पीढ़ी तक पहुँचाने का स्मरण एवं सम्मान करने के लिए सोमनाथ स्वाभिमान पर्व मनाया जा रहा है

▸▸श्री सोमनाथ मंदिर के साथ देश के लाखों नागरिकों की शिव भक्ति तथा आस्था अखंड रूप से जुड़े हुए हैं : मंत्री श्री जीतूभाई वाघाणी

▸▸विश्व के कल्याण तथा मानव जाति के मंगल के लिए ऋषिकुमारों द्वारा निरंतर 72 घण्टे ओमकार जाप किया जा रहा है

▸▸प्रधानमंत्री के अभिवादन के लिए 108 घोड़ों की शौर्य यात्रा तथा ड्रोन शो का आयोजन

(जीएनएस)। गांधीनगर : सोमनाथ स्वाभिमान पर्व की तैयारियों की महत्वपूर्ण जानकारी देते हुए शुक्रवार को राज्य के केबिनेट मंत्री श्री जीतूभाई वाघाणी ने कहा कि श्री सोमनाथ मंदिर के साथ देश के लाखों नागरिकों की शिव भक्ति तथा आस्था अखंड रूप से जुड़े हुए हैं।

श्री वाघाणी ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी संस्कृति एवं अध्यात्म को आधार बनाकर देश को आगे बढ़ाने के लिए निरंतर कार्य कर रहे हैं। उनके मार्गदर्शन में देश व राज्य के आस्था केन्द्रों की महत्ता नई पीढ़ी तक पहुँचाई जा सकी है। सोमनाथ में तीन दिनों के लिए मनाया जा रहा सोमनाथ स्वाभिमान पर्व लोगों के हृदय में बसी आस्था का प्रतिबिंब है।

उन्होंने जोड़ा कि सोमनाथ मंदिर में 72 घण्टों का अखंड ओमकार जाप का विचार प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने दिया है। विश्व के कल्याण तथा मानव जाति के मंगल के लिए ऋषिकुमारों द्वारा निरंतर 72 घण्टे ओमकार जाप किया जा रहा है। यह पवित्र अवसर शिव भक्ति तथा आध्यात्मिक शक्ति का अनूठा संगम बना है। उन्होंने कहा कि सरदार वल्लभभाई पटेल ने सोमनाथ महादेव का जीर्णोद्धार करवा कर राष्ट्र की आस्था तथा स्वाभिमान को पुनर्स्थापित किया था। भारतीय संस्कृति को बनाए रखने के लिए अनेक महान आत्माओं ने बलिदान दिए हैं। उनके स्मरण एवं सम्मान के रूप में सोमनाथ स्वाभिमान पर्व मनाया जा रहा है।

उन्होंने बताया कि 10 जनवरी शनिवार को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी सोमनाथ की पवित्र भूमि पर पधारने वाले हैं। उनकी उपस्थिति में सोमनाथ स्वाभिमान पर्व ऐतिहासिक बनेगा। प्रधानमंत्री के अभिवादन के लिए 108 घोड़ों की शौर्य यात्रा का आयोजन किया गया है तथा भव्य ड्रोन शो द्वारा इस उत्सव को विशेष आकर्षक बनाया जाएगा।

केबिनेट मंत्री ने कहा कि राज्यभर से लाखों भक्त सोमनाथ स्वाभिमान पर्व में सहभागी होने के लिए सोमनाथ आ रहे हैं। राज्य के साधु-संतों द्वारा शुक्रवार को सोमनाथ में भव्य रेवाडी निकाली गई। राज्य सरकार द्वारा किए गए सुव्यवस्थित आयोजन, भव्य रोशनी तथा सुसज्ज व्यवस्थाओं से सोमनाथ की दिव्यता चारों ओर फैल रही है।

उन्होंने सभी समाज के नागरिकों को सनातन धर्म के इस ऐतिहासिक पर्व में सहभागी होने का निमंत्रण दिया। इस अवसर पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के साथ मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल तथा उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी भी उपस्थित रहेंगे।

श्री वाघाणी ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी राजकोट में आयोजित होने वाली वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस (वीजीआरसी) में भी सहभागी होने वाले हैं, जो सौराष्ट्र सहित राज्य के विकास एवं निवेश के लिए महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

कांदिवली–बोरीवली सेक्शन पर छठी लाइन के कार्य के संबंध में पश्चिम रेलवे का मेजर ब्लॉक

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे द्वारा कांदिवली और बोरीवली सेक्शन के बीच छठी लाइन के निर्माण कार्य को पूरा करने के लिए 20/21 दिसंबर, 2025 की रात से 30 दिनों का ब्लॉक लिया जा रहा है, जो 18 जनवरी, 2026 तक जारी रहेगा। इस ब्लॉक के कारण पश्चिम रेलवे की कुछ ट्रेन सेवाएं प्रभावित होंगी। पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, उपर्युक्त कार्य के संबंध में कांदिवली स्थित कार शेड लाइन पर प्वाइंट नंबर 104 को हटाने हेतु 11/12 जनवरी, 2026 की रात्रि में एक मेजर ब्लॉक लिया जाएगा। यह ब्लॉक अप फास्ट लाइन पर 23:15 बजे से 03:15 बजे तक तथा डाउन फास्ट लाइन पर 01:00 बजे से 04:30 बजे तक रहेगा। इसके अतिरिक्त, 12/13 जनवरी, 2026 को कांदिवली में क्रॉसओवर 101/102/103/104 को जोड़ने के लिए एक मेजर ब्लॉक लिया जाएगा। यह ब्लॉक अप फास्ट लाइन पर 23:15 बजे से 03:15 बजे तक और डाउन फास्ट लाइन पर 01:00 बजे से 04:30 बजे तक कांदिवली और मालाड के बीच लागू रहेगा। उपर्युक्त ब्लॉकों, पांचवीं लाइन के निलंबन तथा गति प्रतिबंध लगाए जाने के कारण कुछ उपनगरीय सेवाएं निरस्त रहेंगी।

ब्लॉक के कारण प्रभावित होने वाली उपनगरीय ट्रेनों की विस्तृत सूची अनुलग्नक–I एवं II में दी गई है। इस संबंध में विस्तृत जानकारी संबंधित स्टेशन मास्टरों के पास उपलब्ध है। यात्रियों से अनुरोध है कि उपर्युक्त परिवर्तनों को ध्यान में रखकर अपनी यात्रा की योजना बनाएं।

सोमनाथ स्वाभिमान पर्व की रवाडी (पालखी यात्रा) में ढोल-ताशों ने जमाया भारी आकर्षण

ढोल-ताशों के 50 कलाकारों द्वारा उमंगोल्लासपूर्ण वादन के साथ यात्री भी नाच उठे, तीन ढोल टूटे

(जीएनएस)। गांधीनगर : सोमनाथ स्वाभिमान पर्व अंतर्गत शुक्रवार को भव्य रवाडी (पालखी यात्रा) के दौरान समग्र सोमनाथ नगरी भक्ति एवं उत्साह से गूंज उठी। रवाडी में राज्य के विभिन्न क्षेत्रों से आए भक्त तथा श्रद्धालु बड़ी संख्या में सहभागी हुए।

इस रवाडी के दौरान ढोल-ताशा कलाकारों ने अपनी मनमोहक तथा उमंगोल्लासपूर्ण प्रस्तुति से विशेष आकर्षण उत्पन्न किया। लगभग 50 कुशल कलाकारों ने ढोल और ताशों के ताल-लय के साथ परंपरागत संगीत की प्रस्तुति कर वातावरण को रंगीन बना दिया। गगनभेदी नाद के साथ यात्री भी नाच उठे। वादन इतना उत्साहपूर्ण था कि लगभग तीन ढोल टूट गए। ढोल-ताशों के गूंजते नाद के साथ रवाडी आगे बढ़ रही थी, जिसके कारण मार्ग के दोनों ओर खड़े दर्शकों में भी उत्साह दिखाई दे रहा था। कलाकारों की एकीकृत प्रस्तुति ने समग्र कार्यक्रम को लोकोत्सव के स्वरूप में रूपांतरित कर दिया।

रवाडी के दौरान भक्तों द्वारा जय शिवशंकर तथा हर हर महादेव के उद्घोष के साथ सनातन संस्कृति की महिमा गुंजाई गई। ढोल-ताशों के ताल के साथ भक्ति तथा आनंद का अनूठे संगम का सृजन हुआ।

इस प्रकार; सोमनाथ स्वाभिमान पर्व अंतर्गत निकली रवाडी में ढोल-ताशा कलाकारों की प्रस्तुति ने कार्यक्रम की भव्यता तथा सांस्कृतिक वैभव को और उजागर कर सभी उपस्थितों के लिए इस क्षण को यादगार बना दिया।